ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४९

वर्ष १० अंक ९ मई 2017

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

Final

गुरबाणी विचार

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥
कीमति कउण करे तुधु भावां देख दिखावै ढोलो ॥
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥६॥ *(पन्ना ११०८)*

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी बारह माहा तुखारी में वैशाख मास के प्रकृत्ति-वर्णन के प्रसंग में जीव स्त्री की प्रभु मिलन की तड़प और साथ ही मिलाप के आनंद का भावपूर्ण प्रकटावा करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि वैशाख का महीना अच्छा है। इस महीने वृक्षों एवं पौधों की नयी-नयी पत्तियां निकलने से ऐसे लगता है मानो शाखाओं ने हरा वेश धारण किया हो। ऐसे सुंदर वातावरण को देखकर जीव-स्त्री के मन में अपने पति परमात्मा के साथ मिलन की इच्छा उत्पन्न होती है। वह अपने घर के द्वार पर खड़ी उसकी राह निहारती है और पुकारती है कि मेरी दशा पर तरस करके, ऐ मेरे प्रियतम! घर आ जाओ। यह आध्यात्मिक प्रकटावा है जहां घर का प्रतीक जीव-स्त्री का हृदय है। मनुष्य की समस्त बेचैनी दूर होने का एक मात्र साधन प्रभु-नाम का हृदय में निवास होना है। यह भाव संकेत से समझाया गया है।

हृदय की प्रभु-प्रियतम के साथ मिलाप की तीव्र इच्छा में जीव-स्त्री अपनी विनती, अपनी पुकार फिर दोहराति हुई कहती है कि हे प्रिय! मुश्किल सागर से मुझे पार लगा दो भाव प्रभु-नाम का सहारा होने पर ही जीव-स्त्री संसार रूप भवसागर को पार करने में सक्षम हो सकती है। इस भाव पर बल देने हेतु गुरु जी जीव-स्त्री की ओर से कथन करते हैं कि हे मेरे प्रिय! तेरे बिना मेरा मुल्य कौडी भी नहीं है अर्थात् न होने के समान है, चूंकि कौडी तो बहुत ही मामूली चीज होती है। उसको न लेने वाला कोई महत्त्व देता है न देने वाला। परंतु हे मेरे पति-परमेश्वर! यदि मैं तुझे अच्छी लगने लग जाऊं तो फिर मेरा मूल्य भला कौन आंक सकता है? भाव कोई नहीं आंक सकता यानी कि मैं अमूल्य हो जाती हूं। यदि आप मेरे हृदय में बसने लग जाओ तो मुझे विश्वास होगा कि आप मेरे पास ही हो तथा यह मेरा हृदय रूप महल आपका निवास-स्थान बन जाए और मुझे इस महल की पहचान भी हो जाए। गुरु जी फरमान करते हैं कि ऐसी स्थिति में जिस जीव-स्त्री की सूरति प्रभु की कीर्ति गायन करते सच्चे शब्द के साथ जुड़ जाए, उसका मन उसको मानने लग जाए तो वैशाख में प्रभु जी अच्छे लगने हैं अथवा जीव-स्त्री को मिल जाते हैं।

Final

माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥
थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभु भावा ॥
साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥
निमणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण महिली ॥ *(पन्ना ११०८)*

ज्येष्ठ मास की तीक्ष्ण गर्मी का दृश्य वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी जीव स्त्री की मानसिक-आत्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि ज्येष्ठ का महीना अच्छा है। जीवन के इस पड़ाव में जीव-स्त्री को उनका प्रियतम क्यों भूल जाए? गत मास की सुहावनी ऋतु और इस महीने की कठोरता का वर्णन करके और दोनों महीनों में प्रभु-मिलाप की तीव्र इच्छा का वर्णन करके गुरु जी मनुष्य-मात्र को रहस्यमय संकेत देते हैं कि मनुष्य-मात्र को हरेक स्थिति में प्रभु की मीठी-स्मृति में जीवन रूप समय सफल करना चाहिए। भूमि सूर्य की गर्मी से ऐसे तपती है जैसे भट्ठी में अग्नि जलती है। जीव-स्त्री प्रभु-मिलाप के लिए विनतियां करती है। वह गुण एकत्र करती है ताकि गुणों के संग्रह से वह प्रभु को अच्छी लगने लग जाए संसार की माया से निर्लेप मेरा मन हे प्रभु! आपके सदीवी कायम रहने वाले घर में रहता है अथवा रहना चाहता है परंतु यह आपकी अनुमति, आपकी आज्ञा के बिना कदापि संभव नहीं हो सकता।

कहने से अभिप्राय यह है कि जीव-स्त्री द्वारा प्रभु-मिलन की इच्छा-मात्र ही पर्याप्त नहीं बल्कि स्वामी की कृपा-दृष्टि की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है।

गुरु जी आगे फरमान करते हैं कि मैं जीव स्त्री परमात्मा के बिना सम्मानहीन तथा शक्तिहीन हूं। यदि मालिक ही मेरे पास नहीं तो महलों में भी मुझे सुख नहीं मिल सकता। गुरु जी तत्वसार देते हुए कथन करते हैं कि जो जीव-स्त्री ज्येष्ठ माह को प्रभु-मिलन का सुअवसर समझती हुई, इस माह की ऋतु का सदुपयोग करती हुई ऊंचे आत्मिक तथा नैतिक गुणों का संग्रह कर लेती है उसका मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है, चूंकि वह प्रभु की कृपा दृष्टि को प्राप्त कर लेती है।

संपादकीय

आओ! अपने लासानी इतिहास को विश्व स्तर पर प्रचारने हेतु प्रयत्नशील हों

गुरु साहिबान अकाल पुरख की रज़ा के अनुसार इस जगत में से ईर्ष्या, द्वेष, ज़ब्र-जुल्म इत्यादि बदियों का खातिमा करके परोपकार, नेकी, दया, धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए नेकी के रहबर बनकर आए। गुरु साहिबान ने हमेशा ही अधिकार, सत्य व न्याय के मार्ग को प्राथमिकता दी है। गरीब-निर्धन, निमानों और नितानों के लिए ओट-आसरा बन कर गुरु साहिबान ने जहां मानसिक तौर पर गुलाम जन मानस का स्तर ऊपर उठाया, वहां धार्मिक स्तर पर आ चुकी गिरावट को भी दूर करते हुए गुरबाणी की रचना करके समस्त जनमानस और धार्मिक रहबरों को *"अपना बिगारि बिरांना साढै ॥"* वाली आदर्शक जीवन जांच के अनुसार अपना जीवन ढालने की प्रेरणा की। श्री गुरु नानक साहिब जी ने बदी के खातिमे के लिए गुरबाणी की रचना की, प्रचार यात्राएं कीं एवं मानवता को बदी के टकराव हेतु नाम-सिमरन द्वारा बलवान सुरति के धारणी होने का उपदेश दिया। बाबर के जुल्म (बदी) के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। उस को जाबिर तक कह कर संबोधन किया।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता को अच्छे और बुरे, नेकी और बदी, विनम्रता और अहंकार, धर्म और अधर्म के साथ पहचान करवाई और अपने से पूर्व गुरु साहिबान की विचारधारा (गुरबाणी) को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एकत्र करके समूची मानवता को स्वतंत्र सोच दी। गुरु जी ने मानवता के सामने गुरमति का नवीनत्म सिद्धांत दृड़ करवाया कि सब से पहले जहां तक संभव हो सके शांतमयी ढंग से बदी का मुकाबला करना चाहिए। इस सिद्धांत को अमल में लाते हुए पंचम पातशाह जी ने तत्कालीन हुक्मरान जहांगीर द्वारा दिए असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त की। बदी अपने जुल्म की इंतहा कर के पराजित हुई।

फिर छठम् जामे में जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने महसूस किया कि अब बदी को सख़्ती के बिना मात नहीं दी जा सकती तब आप जी ने शस्त्रधारी होकर बदी के विरुद्ध चार जंगें लड़ीं। दसवें जामे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी विचार को और दृढ़ करते हुए : *चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥ हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥* का सिद्धांत दृड़ करवाते हुए कहा कि जब बदी के विरुद्ध सभी शांतमयी उपाय खत्म हो जाएं तो कृपाण उठानी ही जायज़ है। गुरु साहिबान के दर्शाए मार्ग पर चलते हुए सिक्खों ने बदी के विरुद्ध शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए अनेक साकों, घल्लूघारों के लासानी इतिहास की सृजना की है। गुरु साहिबान की बख़्शिश सदका ही सिक्खों ने अपनी दो फीसदी आबादी के बावजूद अस्सी फीसदी कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया, सब से ज्यादा काले पानी की सज़ाएं भी सिक्खों ने कार्टीं। इन्हीं शहादतों के प्रसंग में इस बार मई माह में समूचा सिक्ख जगत श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी

पर्व, छोटा घल्लूघारा, साका पाउंटा साहिब और सरहिंद फ़तहि दिवस मना रहा है।

इस गौरवशाली इतिहास को पढ़-सुन कर अपने पूर्वज़ों पर गौरव महसूस होता है, जिन्होंने अत्यंत कुर्बानियों से इस लासानी इतिहास को सृजित किया।

आज ज़रूरत है गुरु साहिबान और कौम के शहीदों द्वारा सृजित, इस लासानी इतिहास को विश्वभर में प्रचारने की। आज सिक्खों के लासानी इतिहास और शूरवीरों की गाथाओं को इतिहास के पन्नों से वंचित करने की साज़िशें हो रही हैं। ऐसे समय पंथ विरोधी मनसूबों को नाकाम करने के लिए समूचे नानक नाम-लेवा और समूची सिक्ख जत्थेबंदियों का फर्ज़ बनता है कि हम *"होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥"* वाली आदर्शक जीवन-शैली को अपनाते हुए मानवता के सामने आपसी भ्रातृ भाव तथा पंथक एकता का सबूत पेश करते हुए अपने वचित्र इतिहास और गुरमति सिद्धांतों को विशव भर में प्रचारने और प्रसारने के लिए लामबंद हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगुवाही में पंथ प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन जीते हुए उच्चतम आचर्ण के धारणी बन कर अपनी पीढ़ी को गुरबाणी और गुरमति के अमीर परंपरा के साथ जोड़ें। तभी हमारे ये शहीदी पर्व मनाने सफल होंगे और यही इन शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥१॥
इन्ह बिधि पासा ढालहु बीर ॥
गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥१॥ रहाउ ॥
करम धरम तुम्ह चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम्ह सारी ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥२॥
उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ॥
बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥३॥
हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥
जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥४॥
(पन्ना ११८५)

Final

गुर अरजुनु परतख हरि

-डॉ. जगजीत कौर*

भट्ट साहिबान के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी प्रत्तख हरि (अकाल पुरख का स्वरूप) हैं। अकाल पुरख वाहिगुरु जी की जितनी सामर्थ्य शक्ति है वह सारी श्री गुरु अरजन देव जी में केंद्रित हो गई है और इसीलिए भट्ट साहिबान के अनुसार वे जन्मजात प्रभु-रूप हैं *'तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ (पन्ना १४०७)'* और *'परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवास लीअउ ॥ (पन्ना १४०९)'* इस तथ्य का और खुलासा करते हुए मथुरा भट्ट जी कहते हैं :

धरनि गगन नव खंड महि जोति सवरूपी रहिओ भरि ॥
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि ॥ (पन्ना १४०९)

भट्ट जी के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सर्वशक्तिमान अकाल पुरख वाहिगुरु जी की दिव्य ज्योति श्री गुरु अरजन देव जी के स्वरूप में प्रकट हुई है। श्री गुरु अरजन देव प्रत्यक्ष प्रभु परमात्मा का दिव्य रूप है।

ऐसा विश्वास ऐसी प्रतीति गुरु साहिब के शांत सौम्य व्यक्तित्व के दर्शनों से हुई और उनके द्वारा किए गए अनंत परोपकार कार्यों को देखकर और अंततः लोक कल्याण हेतु सत्य धर्म आदर्श की रक्षा करते हुए अपने कोमल शरीर पर असाध्य कष्ट झेलते हुए शहादत को प्राप्त होते देख कर हुई।

श्री गुरु अरजन देव जी का प्रकाश सिक्ख गुरु परंपरा के चतुर्थ गुरु, श्री गुरु रामदास जी के घर माता भानी की कोख से १५ अप्रैल, सन् १५६३ ई को गोइंदवाल साहिब में हुआ। उस समय तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी भी गुरु-रूप में विद्यमान थे। गुरु-पिता श्री गुरु रामदास जी गुरु-सेवा में लीन थे। अतः बाल्यकाल से ही दो-दो महा पावन आध्यात्मिक शख़्सियतों के निरीक्षण में जीवन का विकास हुआ। लगभग ११ वर्ष दोनों महापुरुषों के जीवन संरक्षण में ही बाल्य काल का विकास हुआ। माता भानी जी स्वयं सेवा समर्पण त्याग की धर्म मूर्ति थी। पूरा वातावरण आध्यात्म भक्तिमय रहा। बाल्य काल से ही नाना जी, पिता जी, माता जी, ने उचित शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। नाना श्री गुरु अमरदास जी से गुरमुखी में सिद्ध हस्तता प्राप्त की। बाबा बुड्ढा जी ब्रह्मज्ञान अन्य विद्याओं इतिहास, राजनीति, अर्थ शास्त्र आदि का ज्ञान देते रहे। ईश्वर प्रदत्त बाल बुद्धि बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र थी। छोटी अवस्था से ही बाणी रचना करने लगे थे इसी बाणी रचना के अभ्यास को देखते हुए ही नाना जी ने आर्शीवाद रूप में कहा था 'दोहिता बाणी का बोहिथा'।

श्री गुरु अमरदास जी ने सितंबर, १५७४ ई. को श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी प्रदान की। कुछ दिन बाद ही श्री गुरु अमरदास जी के परम जोत में लीन होने पर श्री गुरु रामदास जी १५७४ में अमृतसर आ गए। यहां तृतीय गुरुदेव का सरोवर बनाने और नगर बसाने का

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

Final

लक्ष्य था, जिसे पूरा करने चौथे गुरुदेव श्री अमृतसर आ गए। संतोखसर की सेवा आरंभ हो चुकी थी। जिसे श्री गुरु रामदास जी ने पूरा किया। इसी बीच तुंग के जमींदार से ५०० बीघा भूमि ७०० मोहरे देकर खरीदी जिसे पहले गुरु का चक्क और बाद में रामदास चक्क नाम प्रसिद्ध हुआ यहां दुखभंजनी बेरी वाले स्थान से अमृत सरोवर की खुदाई शुरू की गई, जिसे बाद में पक्का और संपूर्ण पंचम पातशाह जी ने किया।

श्री गुरु रामदास जी के तीन पुत्र थे-- बड़ा पृथी चंद जो केवल दुनियादारी, लेन-देन, खेती, व्यापार का काम संभालने का शौक रखता था दूसरा महादेव जो प्रभु-भक्ति ध्यान समाधि में लीन सन्यासी प्रवृत्ति का था। तीसरे श्री गुरु अरजन देव जी जो अत्यंत सौम्य शांत, सहज वृत्ति के थे। बाणी रचना में सिद्धहस्ता और रचनात्मक कार्यों में भी रुचि रखते थे। तीनों पुत्रों में से सेवा समर्पण में योग्य जान श्री गुरु रामदास जी ने अंतिम समय निकट जान सितंबर, १५८१ को छोटे पुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को गुरता प्रदान की। बाबा बुड्ढा जी ने गुरुआई की रस्में निभाईं। इस समय गुरु जी की आयु केवल १८ वर्ष की थी। आपका विवाह तहसील फिलौर के ग्राम मौ साहिब के निवासी भाई किशन चंद जी की सुपुत्री माता गंगा जी से हुआ जिससे काफी वर्षों बाद अति तेजस्वी पुत्र श्री हरिगोबिंद साहिब जी का प्रकाश सन् १५९५ ई. को हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरुआई संभालते ही अपनी सारी शक्ति गुरमति प्रचार और सिक्ख धर्म के उत्थान, विकास हेतु रचनात्मक कार्यों में लगा दी। यद्यपि इनका बड़ा भाई प्रिथी चंद जो नानक पंथ की गद्दी को दुनियावी सुख ऐश्वर्य की गद्दी समझता था गद्दी न मिलने पर क्रोधित था, पिता से भी झगड़ा था और पिता को कहना पड़ा था :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ (पन्ना १२००)

पृथी चंद ईर्ष्या ही करता रहा अनेक प्रकार से विकास कार्यों को रोकने के प्रयास भी करता रहा, साथ में लाहौर के दीवान चंदू शाह को भी साथ मिला लिया। चंदू की लड़की का रिश्ता सिक्ख संगत के कहने पर गुरु साहिब ने श्री गुरु हरिगोबिंद जी से होने को अस्वीकार कर दिया था, पृथी चंद उससे मिला, मुगल दरबार तक शिकायतें पहुंचाता रहा जैसा कि 'बंसावली नामा दसा पातशाहिआं' में लिखा है :

फेर प्रिथिआ आइआ लाहौर।
बिन दुसिटी गल करे न होर नित नित दी चुगली आइ इक दिन फुरी।

किंतु इतने विरोधी तत्वों के रहते हुए भी गुरु साहिब ने अपनी समग्र चेतना रचनात्मक कार्यों में लगाए रखी सबसे पहले अमृत सरोवर को पक्का करवाया। उपरांत तरनतारन, जलंधर के पास करतारपुर नगर बसाया, वडाली के पश्चिम छः रहटों वाला कुंआ लगवाया जहां गुरुद्वारा छेरहटा साहिब है। लाहौर डब्बी बाज़ार में बाउली खुदवाई जहां श्री गुरु रामदास जी का प्रकाश धारण पावन स्थल है और सबसे अनुपम अद्वितीय संपूर्ण विश्व के लिए गुरुदेव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना की जो अनंतकाल तक मानवता को आध्यात्म सुख, शांति, सुकून, मानव एकता, प्यार और सांझीवालता का संदेश देता रहेगा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सबसे बड़ा विलक्षण परोपकार जो मानवता के कल्याण हेतु किया वह है रूहानी सच्ची बाणी का विशाल बोहिथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना। श्री

हरिमंदर साहिब की स्थापना द्वारा जब मानव जगत को *'आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह'* मिल बैठकर प्रभु यश गायन करने का स्थान प्राप्त हो गया था तो आवश्यकता इस बात की भी थी कि इस नवोदित धर्म के मूल सिद्धांत आध्यात्मिक दिशा-निर्देशन हेतु दिए गए उपदेश गुरु नानक काल से ही सच्ची रूहानी बाणी के माध्यम से ही दिए गए थे। श्री गुरु नानक पातशाह जी अपनी लंबी प्रचार यात्राओं के दौरान कुल भटके प्राणियों को सत्य मार्ग पर बाणी के उपदेशों द्वारा ही लाते रहे। उनका साथी भाई मरदाना जी साथ ही रहे जब भी शांत, एकांत अवस्था में गुरुदेव जी अंत:स्थित होते पूर्ण तदाम्य की अवस्था में चितवृत्ति अकाल पुरुष जी से जुड़ जाती तो बाणी का उचारण करते। धुर दरगाह से बाणी आती गुरदेव जी फरमाते 'मरदानिआं वजा रबाब बाणी आई आं' और तब तंत्री नाद की एकस्वरता के साथ मधुर कंठ से जो शब्द निसृत होते वह राह चलते राहगीरों दतचित्त बैठे जुड़ आए, श्रोता गणों को तो अभिभूत कर ही जाते उड़ते पंखेरु भी पंख समेट जुड़ बैठ जाते भ्रमणशील पशु भी शांत चित्त जुड़ बैठते। अनंत मानवता को असीम लोक की दिव्य शांति सुकून और मानसिक तृप्ति प्रदान करती गुरु नानक साहिब जी की बाणी वैसे ही बिखेर दिए जाने वाली वस्तु नहीं थी इस दिव्य बाणी को समेट कर रखने और भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने का दायित्व बोध श्री गुरु अरजन देव साहिब जी की रचनात्मक रुचियों में समाहित था। वे स्वयं राग नाद बाणी रस के पारख प्रभु-चरणों से तदात्म्य हुए कोमल हृदय प्रेम रससिक्त प्रभु भक्त थे। बाणी का महत्त्व उसका समूचित आदर-सत्कार उनके मन में था। इसलिए उन्होंने बाणी का संकलन तैयार करने का मन बनाया। वे स्वयं उच्चकोटि के कवि हृदय बाणी रचयिता थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सर्वाधिक बाणी उनकी स्वरचित है। श्री गुरु अरजन देव जी की दूरदृष्टि/भविष्यदृष्टि महान परोपकार दृष्टि गुरुदेव जी ने अनुभव किया कि फैलते सिक्ख मत को वेद उपनिषद जैन बौद साहित्य कुरान के क्रम में ही सिक्ख मत का भी अपना साहित्य होना आवश्यक है और इसके लिए नवोदित मत के मूल सिद्धांतों को बांध कर रखना ज़रूरी है। श्री गुरु नानक देव जी ने उदासियों के दौरान मध्यकालीन कुछ विशेष प्रमुख भक्त साहिबान की बाणी भी एकत्रित की थी अपनी रची बाणी भी एक पोथी रूप में संभाली थी जो श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और तब श्री गुरु अरजन देव जी के पास सुरक्षित पहुंची। समय-समय पर अपने गुरु-काल में गुरु साहिब ने बाणी रचना की। वह सारी बाणी श्री गुरु अरजन देव जी के पास सुरक्षित पहुंची और श्री गुरु अमरदास जी के उपदेशानुसार *'आवहु सिक्ख सतिगुरु के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥'* सच्ची बाणी का गायन श्रवण, पठन करने के उद्देश्य से बाणी का विशाल बोहिथ पंचम गुरुदेव जी ने तैयार किया श्री अमृतसर रामसर सरोवर के किनारे शांत-एकांत स्थान पर बैठकर गुरु साहिब की अद्भुत संपादन कला के परिणाम स्वरूप भाई गुरदास जी की लेखनी से लिखित बाणी का विशाल बोहिथ सन् १६०४ ई. को संपूर्ण हुआ। भादों सुदी पहली पोथी का प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया। बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी प्रतिष्ठित किया गया।

श्री गुरु अरजन देव जी के अनेक

Final

परोपकार कार्यों से सिक्ख मत खूब प्रफुल्लित और विकसित हुआ। गुरु जी का समकालीन फारसी का प्रसिद्ध लेखक गोबिंद अरदसतानी जो मुहसिन फानी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है इसने अपनी पुस्तक 'दबिसतान-ए-मज़ाहब' में 'नानकपंती' शीर्षक से सिक्ख गुरु साहिबान के बारे में लिखा है, बताता है कि श्री गुरु अरजन देव जी के समय अनेक लोग इस मत में दीक्षित हुए और गुरु में उनकी आस्था चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। सिक्ख मत केवल भारत के सुदूर भागों तक ही नहीं भारत से बाहर काबुल, कांधार, ईरान, बगदाद, अफगानिस्तान आदि अनेक सुदूर देशों तक फैल चुका था और सबसे बड़ी बात है कि उन्हें गुरु जी में उच्च आध्यात्म स्वरूप प्रभु-परमात्मा के दर्शन होते थे। हिंदू ही नहीं अनेक मुसलमान ओर अन्य धर्मों के लोग भी गुरु जी में श्रद्धा रखने लगे थी। इसलिए समय की सत्ता मुगल बादशाह को सहन नहीं होता था और कुछ अन्य कट्टर पंथी भी सहन नहीं करते थे। स्वयं गुरु जी का भाई प्रिथी चंद भी गुरु निंदक था चंदू ने भी साथ दिया इसलिए जब बादशाह जहांगीर का पुत्र खुसरो बगावत करता पंजाब पहुंचा और पकड़ा गया तो खुसरो के सहयोगियों में गुरु जी का नाम भी शामिल किया गया। बहाने से पकड़ उन्हें लाहौर लाया गया। बादशाह पहले से ही विरोधी था। जैसा उसने स्वयं 'तुजके जहांगीरी' में स्वीकार किया है। गुरु जी को लाहौर जहां गुरुद्वारा डेरा साहिब (पाकिस्तान) है तीन दिन खूब कष्ट दिया गया गर्म तवी पर बिठाया, गर्म रेत शीश पर डाली, उबलते पानी में डाला गया, पानी की बूंद तक पीने को नहीं दी गई शरीर फफोलों से भर गया फिर उनके हाथ पैर बांध रावी दरिया ये डुबो दिया गया। ऐसा समकालीन इतिहासकार लिखते हैं। शांत स्वरूप मानवता के मसीहा गुरुदेव शहादत को प्राप्त हुए।

कविता

माता पिता को मत भूलो

*-श्री सुरेंद्र कुमार अग्रवाल**

जिसने तुम्हें लाड़ प्यार से पाला,
माता पिता के उपकार मत भूलो।
जिसने स्वयं भूखे रहकर,
तुम्हें भोजन, कपड़ा, आवास दिया।
उपकारी माता-पिता को मत भूलो,
माता-पिता का तिरस्कार मत करो।
माता पिता की सेवा करो, सुख मिलेगा,
यश सम्मान कीर्ति बढ़ेगी।
माता-पिता का आदर करो, सम्मान दो।

**अग्रवाल न्यूज ऐजेंसी, हटा दमोह, म. प्र, ४७०७७५*

भले अमरदास गुण तेरे

*-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

श्री गुरु अमरदास जी अति शील स्वभाव, नम्रता, सेवा भाव, एक रस भक्ति के धारणी, मानवता का भला सोचने वाले तथा निर्धनों, दुखियों के लिए अथाह हमदर्दी रखने वाले, पारब्रह्म में लीन, श्री गुरु अंगद देव जी के बाद श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई गुरुआई पर आसीन होने वाले तृतीय पातशाह हैं। आप जी का प्रकाश ५ मई, १४७९ ई. को बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में बाबा तेज भान जी तथा माता सुलक्खणी जी के घर हुआ। १५४० ई. में आप श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आए तथा लगभग १२ वर्ष गुरु-घर में रहकर अथाह सेवा की। १५५२ ई. श्री गुरु अंगद देव जी ने आप को गुरगद्दी पर विराजमान किया। भल्ल भट्ट जी ने श्री गुरु अमरदास जी की गुरु-रूप में वडिआई (उस्तति) को इस तरह वर्णन किया है :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्ह उनह जुो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ *(पन्ना १३९६)*

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरबाणी को गुरमुखी अक्षरों में लिखने की प्रथा आरंभ कर दी थी। सिक्खों ने गुरमुखी अक्षरों का ज्ञान हासिल करना शुरू कर दिया था। श्री गुरु अमरदास जी ने शबद-गुरु के सिद्धांत तथा गुरबाणी के महत्त्व को दृढ़ करवाया है। उन्होंने परमात्मा की प्राप्ति के लिए गुरबाणी को ही सबसे बड़ा साधन माना है। अपनी बाणी में गुरु जी ने सिक्खों को बार-बार बाणी पढ़ने की ताकीद की है :

--आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥
(पन्ना ९२०)

--मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥
(पन्ना ३६)

गुरु जी ने बताया है कि गुरबाणी सिर्फ परमात्मा का ज्ञान ही नहीं देती यह प्रत्यक्ष रूप में धरती पर परमात्मा का रूप भी है। गुरबाणी के साथ मन जोड़ लेना परमात्मा को हृदय में बसाना ही है। इसलिए अन्य कोई भी मानवीय गुरु, ब्राह्मण, जोगी, मुर्शिद, पीर, देवी, देवता तथा अवतार पैगंबर गुरबाणी के तुल्य नहीं है। गुरबाणी सबसे ऊपर है और पूज्य है। गुरु जी का पावन फरमान है :

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥
(पन्ना ५१५)

**अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६*

Final

पुरातन काल से ही सारी दुनिया में स्त्री का दर्जा मर्द से अल्प समझा जाता रहा है। सिर्फ सिक्ख धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जिसमें स्त्री को मर्द के समान दर्जा दिया गया है। सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री जाति के हक में आवाज़ उठाई तथा स्त्री को बुरा समझने का खंडन किया। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी धर्म पत्नी बीबी खीवी जी को लंगर की जिम्मेदारी सौंप दी थी। श्री गुरु अमरदास जी ने भी स्त्री जाति के उत्थान के लिए कई ठोस प्रयत्न किए। उन्होंने सबसे पहले पर्दे की रस्म को खत्म किया। गुरु जी ने दरबार में स्त्रियों को पर्दा न करने का हुक्म किया था। इस तरह उनको आज़ादी से संगत में विचरण करके सेवा आदि करने की छूट मिल गयी थी। उस समय विधवा स्त्री का दोबारा विवाह नहीं किया जाता था परंतु मर्द करवा सकता था। गुरु जी ने विधवा स्त्रियों का विवाह करने की रीति का आरंभ किया। सती प्रथा स्त्री जाति के लिए बहुत बड़ी लानत थी। ज्यादातर स्त्री की मर्ज़ी के खिलाफ़ उसको ज़बरन पति के साथ जलाने हेतु आग में फेंक दिया जाता था। गुरु जी ने सती की रस्म को भी बंद करने का उपदेश दिया। उन्होंने ऐसी स्त्रियों को सती नहीं माना। असल में सती का स्वरूप गुरु जी ने बाणी में इस तरह बताया है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥१॥
म : ३ ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥
(पन्ना ७८७)

श्री गुरु अमरदास जी ने सेवक के रूप में खुद लंबा समय श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा की है। उन्होंने अपनी बाणी में गुरु की सेवा करने पर बहुत ज़ोर दिया है। गुरु जी के अनुसार गुरु की सेवा से ही हृदय शुद्ध होता है, हउमै दूर होती है तथा परमात्मा का नाम मन में बसता है। यदि कोई भी चित (मन) लगाकर गुरु की सेवा करेगा उसको अध्यात्म में निश्चय ही सफलता मिलेगी। गुरु जी पावन फ़रमान करते हैं :

सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥
(पन्ना ६४४)

गुरु इस संसार का भला करने हेतु व ज्ञान देन वाला है। गुरु के बिना जीव परमात्मा को नहीं पा सकता, उसको मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। जीव के सारे दुखों का द्वारू व मुक्ति का दाता गुरु ही है। गुरु से बेमुख हो जाने वाले व गुरु के महत्त्व को न समझने वाले जीवों को श्री गुरु अमरदास जी ने सख़्त ताड़ना की है :

सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥
(पन्ना ३०)

यह संसार आदि काल से ही नेकी तथा बदी का क्षेत्र रहा है। नेकी व बदी के विचार को मुख्य रखते हुए गुरमति में दो प्रकार के मनुष्य माने गए हैं। एक नेकी की प्रतिनिधिता करते हैं, यह गुरु की आज्ञा में रहते हैं, इनको गुरमुख कहा गया है। दूसरे, बदी का प्रतीक है यह अपने मन के कहने पर चलते हैं इनके लिए 'मनमुख' शब्द का प्रयोग किया जाता है। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरमुख व मनमुख

Final

दोनों के चरित्रों से अंतर को बहुत ही स्पष्टता से दर्शाया है तथा दोनों के विवरण सहित लक्षण वर्णन किए हैं। गुरमुख सदा गुरु की दी हुई अमृत बाणी बोलते हैं वो सबके अंदर परमात्मा के अस्तित्व को समझते हैं। उनके जीवन का आधार सच होता है। वह अपना जन्म संवारते हैं, अपनी कुल को भी तारते हैं। गुरमुख परमात्मा से मिले होने के कारण कभी बूढ़े नहीं होते। गुरु जी ने जो पावन फरमान किया है :

--गुरमुखि अंम्रित बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥
एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ (पन्ना ६९)

--गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए ॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥
आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥ (पन्ना १२५)

--गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥
गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥
सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥ (पन्ना १०५८)

--गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ (पन्ना १४१८)

मनमुख की भूमिका गुरमुख के विपरीत होती है। गुरमुख गुरु की शरण में रहता है। मनमुख गुरु से बेमुख होता है। मनमुख के मन में दुरमति तथा अहंकार भरा होता है। वह सदा कूड़, कुसत्य रखता है, इसलिए जीवन के उद्देश्य को भूलकर कुराह पर भटकता रहता है। मनमुख दूसरों को कड़वा बोलता है। मनमुख बहुत कठोर चित्त होता है, उसकी कोई कितनी भी भलाई करे उसके मन से ज़हर खत्म नहीं होती। मनमुख अपने आप को बहुत अच्छा समझता है, बातें बहुत करता है परंतु उसके जीवन में अच्छाई और अमल नहीं होता। मनमुख को बाणी का ज्ञान नहीं होता और न ही उसको गुरु के वचन पर विश्वास होता है। गुरु जी ने इस तरह फरमान किया है :

--गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥
गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥
(पन्ना १३१)

--मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥
अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥
कूड़ु कुसतु ओहु पाप कमावै ॥
किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥
(पन्ना ३१४)

--नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु ॥ (पन्ना ५०८)

--मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥
सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥
(पन्ना ७५५)

--मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥
बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥
ओना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ (पन्ना १४१५)

मनुष्य का रिश्ता परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए गुरबाणी में शबद-गुरु के महत्त्व को प्रकट किया गया है। गुरबाणी में स्थान-स्थान पर सिक्खों को शबद के साथ जुड़ने का उपदेश किया गया है। आज की तरह उस समय भी कई तरह के भेखी लोग वडिआई (प्रशंसा) करवाने हेतु अपने आप को गुरु कहलाते थे। उनके शिष्य भी लोगों को भ्रम में डालने के लिए गुरु की वडिआई के बारे में कूड़-कहानियां जोड़-जोड़कर लोगों को सुनाते थे। आज भी कई

Final

ऐसे डेरेदार हैं जो सिक्ख इतिहास को बिगाड़कर अपने आप को गुरु सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे डेरेदारों के शिष्य कुछेक धन के बदले उनका झूठा प्रचार करते रहते हैं। ऐसे दंभी (भेखी) डेरेदारों तथा उनके शिष्य ज्ञानहीन होते हैं, वह अकाल पुरख के हुक्म के आगे सिर झुकाने की जगह अपनी भूख पूरी करने हेतु पाखंड करते हैं तथा झूठ पे झूठ बोलते रहते हैं। गुरु जी ऐसे डेरेदारों तथा शिष्य की सख़्त निंदा करते हुए पावन फरमान करते हैं :

गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥
ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥
(पन्ना ९५१)

गुरु साहिबान ने मनुष्य को निरोल सच का ज्ञान दृढ़ करवाया है। गुरमति के अनुसार गुर-परमेश्वर मनुष्य के मन में बसता है। उसकी प्राप्ति हेतु भटकने की या पाखंडी लोगों की मुहताजी करने की आवश्यकता नहीं। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि सबका मूल परमात्मा है। मन अपने मूल को पहचान कर ही परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। बाहरी जगत में ढूंढने की बजाय मनुष्य को अपने अंदर दृष्टि डालनी एवं सुरति टिकानी चाहिए। प्रभु-परमात्मा सदा ही मन के साथ-साथ होता है। मनुष्य उसके अस्तित्व का आनंद अपने अंदर ही मान सकता है। गुरु जी ने निम्नलिखित महावाक्य द्वारा यह सीख दी है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु के लंगर की प्रथा को और सुदृढ़ किया। उन्होंने 'पहिले पंगत पाछे संगत' की मर्यादा स्थापित की। गुरु जी के दर्शनों हेतु आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पहले पंगत में बैठकर लंगर छकना पड़ता था। गुरु जी का आश्य सबको एक पंगत में लंगर छकाकर जाति-पाति तथा छूत-छात की भावना संगत में से खत्म करना था। गुरु जी ने श्री गोइंदवाल साहिब में बावली (जलाशय) तैयार करवाई। इस में स्नान करने की सबको छूट थी। इस प्रकार गुरु जी ने मानवीय एकता व भाईचारे के सिद्धांत को अमलीय रूप दिया। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी का वचन मानकर नया नगर गुरु का चक्क (श्री अमृतसर) बसाया था। यह स्थान आज सिक्ख धर्म का प्रमुख केंद्र है। गुरु जी ने सिक्खी के प्रचार हेतु चुनिंदा सिक्खों को भी जिम्मेदारी दी। उन्होंने दूर-दूरस्थ क्षेत्रों में सिक्खी का प्रसार व प्रचार करने हेतु २२ मंजियां स्थापित की। गुरु जी ने अपने दो पुत्रों-- बाबा मोहन जी तथा बाबा मोहरी जी की जगह अपने अनन्य सिक्ख श्री (गुरु) रामदास जी, जो रिश्ते में आप जी के दामाद लगते थे तथा बीबी भानी जी के पति थे, को गुरगद्दी पर विराजमान किया। १ सितंबर, १५७४ ई. को श्री गोइंदवाल साहिब में श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समा गए।

Final

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी 'मारु की वार' का विषय विवेचन

*-डॉ. परमजीत कौर**

जगत में मनुष्य का निवास रैन बसेरे की तरह हैं, पर जीव अपने जीवन की नश्वरता को भुलाकर उन कामों में उलझ जाता है जो उस को मोह के बंधनों में बांधकर जीवन के उद्देश्य से दूर ले जाते हैं। अज्ञानता के कारण माया-मोह में फंसा हुआ सारा जीवन मानसिक शांति की खोज में भटकता रहता है। यह भूल जाता है कि दुर्लभ-देह को प्राप्त करके नाम सिमरन करते हुए जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति तथा परमात्मा में लीनता ही उसके जीवन का उद्देश्य है।

'मारु की वार' में श्री गुरु अमरदास जी ने माया-मोह में लिप्त जीव को माया की निस्सारता के बारे में समझाते हुए, माया के बंधनों में फंसे प्राणी की अवस्था का चित्रण कर परमात्मा की सर्वव्यापकता का बोध कराते हुए प्रभु के नाम-सिमरन के महत्त्व को दृढ़ करवाया है तथा गुरु से ज्ञान प्राप्त कर, नाम को जीवन का आधार बनाने वाले जीवों द्वारा अपनाये गये मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

माया के आकर्षन में फंसा हुआ जीव मन का गुलाम बन जाता है तथा अपनी मौत को भूल जाता है। गुरु जी समझा रहे हैं कि यह माया साथ नहीं जाती सिर्फ दुख का कारण बनती है :

माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥
चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥
अगिआनी अंधु न बूझई
सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ (पन्ना १०८७)

मनमुख की दुखपूर्ण अवस्था की उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि जैसे कपड़े धोने के लिए धोबी कपड़ों को पटरे पर पटकता है, जैसे घड़िआल बार-बार चोट सहता है वैसे ही नाम-सिमरन न करने वाले माया-लिप्त प्राणी दुखों की चोट सहते हैं :

कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥
नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥
(पन्ना १०८८)

सांसारिक धन माया आदि को अर्जित करने वाले धनिक या उच्चपदों को प्राप्त करने वाले समर्थ लोग वास्तविक भुपति नहीं कहे जा सकते क्यों कि वे सदैव संतप्त रहते हैं तृष्णा की आग में जलते रहते हैं तथा ये वस्तुएं धन, पद आदि स्थायी नहीं होती, नष्ट हो जाती हैं। गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं :

एहि भूपति राजे न आखीअहि
दूजै भाइ दुखु होई ॥
कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥
(पन्ना १०८८)

जीव के लिए परमात्मा का नाम ही वह खजाना है जो मनुष्य के साथ जाता है, कभी समाप्त नहीं होता। सांसारिक धन जितना चाहे एकत्र कर लिया जाए पर नाम-धन के बिना संतुष्टी प्राप्त नहीं होती :

--इसु जुग महि नामु निधानु है
नामो नालि चलै ॥

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६*

Final

एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥
(पन्ना १०९१)

--हरि नाम बिना जगतु है
निरधनु बिनु नावै त्रिपति नाही ॥ (पन्ना १०९१)

प्रभु के नाम के बिना कुछ भी स्थिर नहीं है :

नानक नाम बिना को थिरु नही
नामे बलि जासा ॥ (पन्ना १०९०)

नाम-धन एकत्र करने वाले ही सच्चे साहूकार है, व्यापारी हैं :

से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥
(पन्ना १०९१)

मनमुख इस व्यापार के महत्त्व को नहीं जानता वह सदा माया के व्यापार में लगा रहता है सदा चिंतित तथा दुखी रहता है। उसकी भूख कभी समाप्त नहीं होती। गुरु साहिब समझा रहे हैं :

मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥
अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥
सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥
सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥
(पन्ना १०९२)

मौत का भय एक ऐसा कांटा है जो हर समय सब को चुभता रहता है। माया-मोह में लिप्त लोगों को यह डर, यह सहम जीने नहीं देता परंतु परमात्मा के नाम को जीवन का आधार बनाने वाले मनुष्यों को यह डर संतप्त नहीं करता :

मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥
खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥
फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥
तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥
(पन्ना १०९०)

मन के पीछे चलने वाले केवल विद्या के सहारे चर्चा करते रहते हैं। आत्मिक ज्ञान से हीन के पढ़े लिखे भी मूर्ख ही रहते हैं :

--बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥
(पन्ना १०९१)

--जग महि राम नामु हरि निरमला
होरु मैला सभु आकारु ॥
नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥
(पन्ना १०९१)

मनमुख जीव फोकट कर्मों के चक्कर में पड़े रहते हैं। परमात्मा की सर्व व्यापकता को नहीं समझते। उनका मन सदा भटकता रहता है। परमात्मा की रज़ा को मीठा करके नहीं मानते। ऐसे जीव अपनी ओर से भक्ति करते हैं पर प्रभु हृदय-घर में बसता हुआ भी उन्हें दूर प्रतीत होता है :

आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥
जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥
(पन्ना १०९४)

गुरु की शरण में आकर गुरु से प्राप्त ज्ञान द्वारा ही माया-मोह के जाल तथा अहंकार रूप किले से निकला जा सकता है :

गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥
दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥
(पन्ना १०८७)

गुरमति के मार्ग पर चलकर जिनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है वे नाम सिमरन करके माया से उत्पन्न दुख को जला देते हैं :

नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥
(पन्ना १०८७)

सर्वप्रथम मन को वश में करना पड़ता है। श्री गुरु अमरदास जी विस्तार से समझा रहे हैं कि मन को वश में करना आसान नहीं है। मन के साथ झगड़ा करना पड़ता है गुरु जी के अनुसार शूरवीर वे नहीं जो अहंकार के जाल में फंसे रहते हैं। क्रोध में आकर दूसरों

Final

के साथ लड़ते हैं :

सूरे एहि न आखीअहि
अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥
अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥
अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥
(पन्ना १०८९)

वास्तविक शूरवीर वे हैं जो मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। जो गुरु-कृपा से मन को जीत लेते हैं वे संसार को जीत लेते हैं। ऐसे जीव माया के पीछे नहीं भटकते। अपने अंदर की यात्रा करते हैं तथा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर लेते है :

जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥
हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥
गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥
हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥
जिन गुर परसादी मनु जीतिआ
जगु तिनहि जिताना ॥ (पन्ना १०८९)

गुरु के शबद की विचार से ही मन को वश में किया जा सकता है। गुरु के उपदेश पर चलने से मन वश में आ जाता है :

एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥
नानक मन ही कउ मनु मारसी
जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ (पन्ना १०८९)

मानव शरीर के लिए गुरु का शबद मानों गहना है। इस गहने की बरकत से सदा सुख मिलता है :

देही नो सबदु सीगारु है
जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (पन्ना १०९२)

जब मनुष्य मन की मति का त्याग कर गुरु-शबद की विचार करके गुरमति के अनुसार चलता है तो परमात्मा का गुण-कीर्तन करने में लग जाता है। गुरु जी दृढ़ करवा रहे हैं कि एक परमात्मा के नाम का ही सिमरन करना चाहिए जिसके बिना अन्य कोई संभालने वाला नहीं है :

जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥
एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
(पन्ना १०९२)

गुरु जी समझा रहे हैं कि परमात्मा की सिफति-सालाह (गुण कीर्तन) को पोशाक बनाओ। यह पोशाक सदा साफ रहती है कभी मैली नहीं होती। इस तरह मन को विकारों की मैल नहीं लगती। कर्त्तापन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह समझ आ जाती है कि परमात्मा ही सब कुछ करने वाला है :

--अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥
गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥
खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥
(पन्ना १०९३)

--खाणा सबदु चंगिआईआ
जितु खाधै सदा त्रिपति होइ ॥
पैनणु सिफति सनाइ है सदा
सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥
(पन्ना १०९२)

मन को वश में करने के साथ-साथ मन को खोजना भी पड़ता है। श्री गुरु अमरदास जी के मत में जो गुरु-शबद को हृदय में बसाकर अपने मन को खोजते रहते हैं वे ही परमात्मा का नाम-सिमर कर मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं :

जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥
जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥
(पन्ना १०९१)

हृदय में परमात्मा का भय होना भी जरूरी है। परमात्मा का डर ही आत्मिक जीवन की खुराक है। गुरु की शरण के बिना यह डर पैदा नहीं होता। श्री गुरु अमरदास जी

का फरमान है :

जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥
आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥
(पन्ना १०८८)

परमात्मा का डर अदब न रखने वाला जीव लोक-परलोक में इज्जत गवाकर आत्मिक जीवन से हीन हो जाता है। विकारों से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता :

जिन कउ अंदरि गिआनु नही
भै की नाही बिंद ॥
नानक मुइआ का किआ मारणा
जि आपि मारे गोविंद ॥ (पन्ना १०९३)

अपने आत्मिक जीवन को परखने वाले जीव गुरबाणी को जीवन का आधार बनाकर नाम-सिमरन करते हुए नाम-रस का आस्वादन कर सांसारिक रसों के पीछे भटकना छोड़ देते हैं। उनके अंदर से माया की तृष्णा समाप्त हो जाती है। वे सदा-रस से तृप्त रहते हैं :

गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥
हरि रसु जिनी चाखिआ
अन रस ठाकि रहाइआ ॥
हरि रसु पी सदा त्रिपति भए
फिरि त्रिसना भुख गवाइआ ॥ (पन्ना १०८८)

गुरु शबद के अनुसार जीवन बनाते हुए प्रभु-दर पर आदर प्राप्त करते हैं। सुंदर जीवन वाले बन जाते हैं :

गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥
आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥
सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥
(पन्ना १०८८)

नाम-सिमरन करते हुए एक परमात्मा की आराधना से मन के अंदर टिक जाना ही जप तप तथा संयम है। शबद-सुरति के मेल से इंद्रियों को वश में किया जा सकता है। भ्रम मोह अज्ञान तथा अहंकार का नाश हो जाता है। गुरु जी का फरमान है :

अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥
हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥
(पन्ना १०९२)

प्रभु का नाम अमूल्य है इस नाम धन की कीमत नहीं लगाई जा सकती :

सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ
इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥
इतु धनि पाइऐ भुख लथी
सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (पन्ना १०९२)

गुरु के सम्मुख होकर प्रभु का गुण कीर्तन ही नाम की प्राप्ति का मूल्य दिया जा सकता है। गुरु के शबद द्वारा ही हृदय कमल खिलता है, इस तरह ही नाम रस पिया जा सकता है तथा अत्मिक स्थिरता प्राप्त की जा सकती है :

हरि का नामु अमोलु है किउ कीमति कीजै ॥
आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥
गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥
आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥
(पन्ना १०८८)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जो जीव सतिगुरु के शबद द्वारा प्रभु का नाम जपता है, अपने मन से जूझता है, वह इस वास्तविकता को समझ लेता है कि प्रभु की शरण में आकर ही मौत के भय से बचा जा सकता है। जो अपने मन में प्रभु के गुणों का विचार करके बंदगी करता है वह प्रभु-दर पर कबूल हो जाता है। सिमरन करने से मन में परमात्मा का प्रेम पैदा हो जाता है :

--सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥
मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥
(पन्ना १०९०)

Final

--अंतरि हरि रंगु उपजिआ
गाइआ हरि गुण नामु ॥ (पन्ना १०९०)

नाम अमृत अंदर ही है पर गुरु-शबद के द्वारा नाम रस के आस्वादन से रस आता है। जिन्होंने नाम-अमृत पिया वे निर्भय हो गए :

अंदरु अंम्रिति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥
जिन चाखिआ से निरभउ भए
से हरि रसि ध्रापै ॥
हरि किरपा धारि पीआइआ
फिरि कालु न विआपै ॥ (पन्ना १०९२)

परमात्मा के नाम का सिमरन करने से मन निर्मल हो जाता है चिंता, तनाव दूर हो जाता है तथा मानसिक शांति प्राप्त हो जाती है इसलिए अन्य सब मोह को त्यागकर एक परमात्मा को ही अपना मित्र बनाना चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी दृढ़ करवा रहे हैं।

सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥
मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥
आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥
सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥
नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥
(पन्ना १०९३)

जिस पर प्रभु कृपा करता है वह ही गुरु की शरण में आकर दिन-रात नाम सिमरन की कमाई करता है :

जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै
सो हरि गुण गावै ॥
धरम राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥
हरि नामु धिआवहि दिनसु राति
हरि नामि समावै ॥ (पन्ना १०९१)

कविता

कुदरत

*-बीबी जसप्रीत कौर 'फ़लक'**

कुदरत कभी बेरहम नहीं होती
कि दुआ के कोई हाथ उठे
और दुआ कबूल न हो।
प्यासी धरती को पानी न मिले
सूखी टहनीयों पर अंकुर न फूटे
ज़ख्मों को दवा न मिले।
कुदरत कभी बेरहम नहीं होती
कि दुआ के लिए कोई हाथ उठे
और दुआ कबूल न हो।
हर किसी के सीने में छुपा हुआ है
कोई न कोई क्षमता का बीज
अंगुलियों में पनपता है गज़ब का हुनर
आंखों में ठहरी है अज़ब सी अदा
हर किसी के सीने में छुपा हुआ है
कोई न कोई क्षमता का बीज।
चाहिए सच की मिट्टी, शीशे की निगाह
मेहनत का पानी और दुआ की हवा
कुदरत कभी बेरहम नहीं होती
कि दुआ के लिए कोई हाथ उठे
और दुआ कबूल न हो।

मकान नं. ११ सेक्टर ए, गुरू गियान विहार डुगरी लुधियाना फोन: ८८७२४-७२८३६

Final

गोइंदवालु गोबिंदपुरी सम. . .

-डॉ राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

विश्व में श्री गोइंदवाल साहिब की ख्याति 'सिक्खी के धुरे' अर्थात् सिक्ख विचारधारा के केंद्र के रूप में है। श्री अमृतसर से ४० किलोमीटर, श्री तरनतारन साहिब से २४ किलोमीटर और श्री खडूर साहिब से ८ किलोमीटर दूर स्थित यह गुरु की नगरी तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की कर्म भूमि और साधना-स्थली रही है।

नगर की पृष्ठभूमि : ब्यास नदी के तट पर गोइंदा खत्री की विशाल भूमि थी। इस स्थान पर पहले एक नगर था जो दिल्ली-लाहौर मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण एक बड़ा व्यापारिक केंद्र भी था परंतु बाद में शेरशाह सूरी ने एक नया मार्ग (वर्तमान शेरशाह सूरी मार्ग) बनवा दिया। जिस के कारण यह नगर अलग-थलग पड़कर वीरान हो गया। इसलिए गोइंदा खत्री ने श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में आकर विनती की कि वे इस पुराने नगर के निकट उसकी भूमि पर एक नया नगर बसाने की कृपा करें।

श्री गुरु अंगद देव जी ने जब सन् १५५२ ई में श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई सौंपी तो साथ ही आदेश दिया कि वे ब्यास नदी के किनारे गोइंदा खत्री की ज़मीन पर एक नये नगर का निर्माण करें। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-आज्ञा का पालन किया और नये नगर का नाम प्रेमी सिक्ख गोइंदा खत्री के नाम पर 'गोइंदवाल' रखा।

महान् ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी : तीसरे पातशाह ने अपना सारा गुरु-काल यहीं बिताया। यहीं गुरु-पुत्री बीबी भानी का 'आनंद कारज' भाई जेठा जी के साथ सम्पन्न हुआ जो आगे चलकर चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म (प्रकाश) भी इसी नगर में हुआ। चौथे एवं पांचवें पातशाह को गुरगद्दी पर सुशोभित भी यहीं किया गया। तीसरे और चौथे पातशाह यहीं ज्योति-जोत समाये।

गुरु-परिवार के ऐसे ही अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी के रूप में गुरुद्वारा हवेली साहिब यहां सुशोभित है। हवेली साहिब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का निवास स्थान था। गुरु जी यहीं दीवान सजाया करते थे। इसके बरामदे में वह स्थान है जहां चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी को गुरआई प्रदान की गई थी। इस के पास ही तीसरे पातशाह और चौथे पातशाह के ज्योति-जोत समाने वाला स्थान है। बरामदे में ही एक ओर बीबी भानी का चूल्हा है और पास ही वह कमरा है जिसमें पंचम पातशाह का जन्म हुआ था। हवेली साहिब ही वह स्थान है जहां भट्ट कवि गुरु-दरबार में हाज़िर हुए थे।

तीसरे पातशाह का साधना-स्थल : श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गोइंदवाल साहिब में एक ८४ सीढ़ियों वाली 'बावली' का निर्माण कराया। यहां गुरुद्वारा बाउली साहिब सुशोभित है। छूआछूत भेदभाव को मिटाने के लिए गुरु साहिबान ने सांझे सरोवरों एवं बावलियों का निर्माण कराया ताकि सभी लोग यहां एक ही जल में स्नान करके अपने समस्त भिन्न-भेद मिटा सकें।

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

Final

श्री गोइंदवाल साहिब में निवास करते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार को एक नया रूप दिया। गुरु जी ने सारे सिक्ख जगत को २२ भागों में बांटा और प्रत्येक क्षेत्र में एक निष्ठावान सिक्ख को प्रचार कार्य हेतु नियुक्त किया। ये स्थान मंजियों के रूप में प्रसिद्ध हुए। गुरु जी ने प्रचार हेतु सिक्ख बीबियों की नियुक्ति भी की। ये केंद्र 'पीड़ियां' कहलाए।

श्री गुरु अमरदास जी महान् समाज सुधारक थे। आपने जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, स्त्रियों के प्रति अत्याचार जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध ज़ोरदार मुहिम चलाई। मानवीय समता को स्थापित करने के लिए गुरु जी ने दर्शनों से पहले एक पंगत में बैठकर लंगर छकने का नियम बनाया। मुगल बादशाह अकबर जब गुरु-दर्शनों हेतु श्री गोइंदवाल साहिब आया तो उसने भी संगत के साथ एक पंगत में बैठकर लंगर छका था।

तीसरे पातशाह ने 'सती प्रथा' को समाप्त करने में भी विशेष भूमिका निभाई। गुरु जी ने सती की परिभाषा को ही बदल डाला। आपने फरमाया कि सती वह नहीं जो पति के शव के साथ जल मरे बल्कि सती वह है जो प्रभु-प्रेम में रत्त रहे :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ (पन्ना ७८७)

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी पवित्र बाणी 'अनंदु साहिब' का उच्चारण भी श्री गोइंदवाल साहिब में ही किया। दशमेश पिता जी ने इसे 'अमृत पान' के समय पढ़ी जाने वाली पांच बाणियों में सम्मिलित किया।

इसके अतिरिक्त तीसरे पातशाह ने गुरु साहिबान एवं भक्त साहिबान की बाणी को पोथियों में दर्ज करवा के सुरक्षित कर दिया। इस प्रकार गुरु साहिब ने बाणी की शुद्धता निश्चित की और उसमें प्रक्षिप्त जुड़ने से रोका। गुरु जी ने कच्ची बाणी को त्याग 'सच्ची बाणी' को संरक्षित किया जिसका उपयोग बाद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के संपादन के समय किया।

श्री गुरु अमरदास जी ने सन् १५५२ ई. से लेकर १५७४ ई. तक श्री गोइंदवाल साहिब में निवास किया। इस काल में गुरु जी ने सिक्खों का अद्भुत नेतृत्व करने के साथ-साथ समाज-सुधार की भी व्यापक लहर चलाई। गुरु जी के तेजस्वी व्यक्तित्व के विषय में कीरत भट्ट ब्यान करते हैं :

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥
जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥
नानक कुलि निंमलु अवतरिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥
गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ (पन्ना १३९५)

सन् १५७४ ई. में तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी सौंपकर ज्योति-जोत समा गए।

इस प्रकार श्री गोइंदवाल साहिब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का साधना-स्थल रहा है। नल्ह भट्ट इस नगर की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं :

गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्हन तीरि बिपास बनायउ ॥ (पन्ना १४००)

अनेक ऐतिहासिक गुरुधामों एवं स्मृतियों को अपने दामन में समेटे यह पवित्र नगर अब एक बड़े औदयोगिक केंद्र के रूप में उभर रहा है। ब्यास नदी पर नया पुल निर्मित हो जाने से इस गुरु की नगरी का व्यापारिक महत्त्व भी बढ़ गया है।

Final

चाली मुकते

-स. गुरदीप सिंघ*

मुकता पद बहु-अर्थी है, जिसके अर्थ हैं-- बंधनों से रहित, मुक्ति को प्राप्त हुआ, जन्म-मरण से रहित आदि। गुरमति में अत्यंत ऊंची आध्यात्मिक अवस्था में पहुंचे हुए परम पुरखों के लिए 'मुकता' पद का प्रयोग किया गया है। मुकता वह है जो सांसारिक कार्य-व्यवहार करता हुआ दुनियावी माया से निरलेप और आंतिरक रूप से अकाल पुरख से जुड़ा हुआ है। गुरबाणी में मुकता कौन है ?

कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥
कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥
कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥
कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥
घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ (पन्ना ९३९)

गुरमति अनुसार पूरे गुरु के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। परमात्मा का सिमरन करने से सब प्रकार के दुख खत्म हो जाते हैं :

आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥
सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥
(पन्ना ८१४)

चाली मुकतों से भाव है वह चालीस सिक्ख जो दुनियावी बंधनों से ऊपर उठ कर गुरु के नमित कुर्बान होने के कारण मुकत पद के अधिकारी बने। श्री मुकतसर साहिब के स्थान पर भाई महां सिंघ की अगुवाई में बेदावा देने वाले सिंघों द्वारा शहीदियां प्राप्त करने वाले मुख्य सिंघों के लिए 'चाली मुकते' शब्द का प्रयोग किया जाता है। महानकोश के अनुसार यहां शहीदी प्राप्त करने वाले ४० मुख्य सिंघों के नाम इस प्रकार हैं--भाई समीर सिंघ, भाई सरजा सिंघ, भाई साधू सिंघ, भाई सुहेल सिंघ, भाई सुलतान सिंघ, भाई सोभा सिंघ, भाई संत सिंघ, भाई हरसा सिंघ, भाई हरी सिंघ, भाई करन सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई काला सिंघ, भाई कीरत सिंघ, भाई कृपाल सिंघ, भाई ख़ुशाल सिंघ, भाई गुलाब सिंघ, भाई गंगा सिंघ, भाई गंडा सिंघ, भाई घरबारा सिंघ, भाई चंबा सिंघ, भाई जादो सिंघ, भाई जोगा सिंघ, भाई जंग सिंघ, भाई दयाल सिंघ, भाई दरबारा सिंघ, भाई दिलबाग सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई धंना सिंघ, भाई निहाल सिंघ, भाई निधान सिंघ, भाई बूड़ सिंघ, भाई भाग सिंघ, भाई भोला सिंघ, भाई भंगा सिंघ, भाई महा सिंघ, भाई मज्जा सिंघ, भाई मान सिंघ, भाई मैया सिंघ, भाई राइ सिंघ, भाई लछमन सिंघ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माछीवाड़े से होते हुए 'दीने' नामक स्थान पर पहुंचे। यहां पर गुरु जी ने औरंगज़ेब को 'जफ़रनामा' लिख कर भाई दया सिंघ द्वारा भेजा था। जब सरहिंद के सूबे को ख़बर मिली कि गुरु जी 'दीने' में हैं तो उसने चौधरी लखमीर और समीर को संदेश भेजा कि गुरु जी बादशाह के बागी हैं इसलिए उन्हें मेरे हवाले कर दो। लखमीर, समीर और तखत मल तीनों भाई राय जोध के पोते थे जिसने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की लड़ाई के मैदान में बहुत सहायता की थी और उसके २५० जवान शहीद हो गए थे। गुरु जी की कृपा द्वारा ये तीनों भाई इलाके के चौधरी और सरदार थे। जब इनको पता चला कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (श्री गुरु

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

Final

हरिगोबिंद साहिब के पोते) चमकौर की जंग के सख़्त घेरे में से निकल कर यहां आए हैं, तो इन्होंने गुरु जी की बड़ी सेवा की।

भारी फौज के साथ सूबा सरहिंद वज़ीर खां ने चढ़ाई कर दी। पानी का स्रोत देखकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खिदराणे की ढाब' के साथ एक टिब्बी पर अपना ठिकाना कर लिया। वजीर खां की फौज अभी कुछ मील पीछे ही थी जब माझे की संगत गुरु जी के पास पहुंच गई। ये वही सिंघ थे जो श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय गुरु जी को 'बेदावा' लिख कर दे आए थे। इनमें से भाई महां सिंघ सहित ४० सिंघ और माई भागो जी भी शामिल थे। ये सिंघ अपने लिखकर दिए हुए 'बेदावा' को वापिस लेकर अपने आप को बख़्शवाना चाहते थे। इन्होंने 'खिदराणे की ढाब' के पास मोर्चा लगा कर आस-पास झाड़ियों पर चादरे, कपड़े आदि तान दिए ताकि वे देखने में लगे कि यहां पर तंबू लगे हैं। दोनों तरफ से गोलियों और तीरों की बौछार होने लगी। गुरु जी टिब्बी पर थे और वहीं से तीर चलाकर वैरियों को खत्म करने लगे। सिंघों ने भी बंदूकें और तीर चलाए। गोलियां और तीर खत्म हो जाने पर अपनी तेगो के साथ ही उन पर टूट पड़े। दुश्मनों के पास पानी का कोई साधन न था। प्यास से बेहाल दुश्मन फौज मरने लगी। बचे हुए लड़ाई करने वाले मुगल सैनिक और सेनापति पीछे हटने लगे। अंत में युद्ध खत्म हुआ।

गुरु जी टिब्बी से नीचे आकर जंग-ए-मैदान में पहुंचे। दुश्मन फौज भारी संख्या में मरी पड़ी थी ये चालीस सिंघ भी शहीद हो चुके थे गुरु जी ने सिंघों को वरदान दिया यह मेरा पंज हजारी, यह मेरा दस हज़ारी आदि। माई भागो जी भी बुरी तरह घायल हो गई थी। सिंघों में से भाई महां सिंघ जी के श्वास अबी चल रहे थे। गुरु जी ने भाई महां सिंघ का सिर अपनी गोद में रखा। मुंह साफ किया और पानी डाला। भाई महां सिंघ ने आंखें खोलीं। गुरु जी का दीदार कर निहाल हो गया। गुरु जी ने कहा, महां सिंघ मुख से मांग जो मांगना चाहता है। तू और तेरे साथी मैदान-ए-जंग में सच्चे शूरवीर बनकर जूझे हैं। भाई महां सिंघ जी ने हाथ जोड़कर विनती की सतिगुरु जी आपके दीदार करके सब आशाएं पूरी हो गईं, मेहर के घर में आए हो तो 'बेदावा' फाड़ दो। हमारी भूल बख़्श कर 'टुट्टी गंढ दिओ।' गुरु जी तो सब जानते थे कि मेरे टूट गए सिंघ एक दिन दोबारा गुरु-घर से अपना नाता जोड़ लेंगे। गुरु जी ने बेदावा फाड़ दिया। पूर्ण संतुष्टि और अकाल पुरख की शुक्रगुजारी के मनोभावों से भाई महां सिंघ जी के श्वास पूरे हो गए।

गुरु जी ने भाई महां सिंघ जी और सारे शहीद सिंघों का अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया। जिस समय अंगीठा जल रहा था गुरु जी ने हुक्म किया "ये मुक्त हुए। यह ताल खिदराणा नहीं मुकतसर है।" इन मुकतों की यादगार रहेगी, शहीद गंज रहेगा। भाई संतोख सिंघ जी के अनुसार गुरु जी ने फरमाया :

अबि तो नाम मुकतिसर होइ।
खिदराणा इस कहै न कोइ।
इस थल मुकति भए सिख चाली।
जे निशपाप घाल बहुत घाली ॥४६॥
यां ते नाम मुकतिसर होवा।
जो मंजहि तिन ही अघ खोवा।
अस महिमा श्री मुख ते कही।
सो अब प्रगट जगत में सही ॥४७॥

(सूरज प्रकाश पन्ना ६०४४)

इस स्थान पर अब गुरुद्वारा 'शहीद गंज साहिब' सुशोभित है। रोज़ाना ही अरदास में इन 'चाली मुकतों' को याद किया जाता है।

सरहिंद विजय

*-प्रो. सुरिंदर कौर**

जब से सृष्टि अस्तित्व में आई है तब से इतिहास के किसी न किसी मोड़ पर या ठहराव पर युद्ध होते रहे हैं। कारण, क्षेत्र और परिवेष बेशक भिन्न रहे हों पर एक बात सभी युद्धों में समान रही है और वो है सेनापति की भूमिका जिसने अपनी प्रतिभा से न केवल युद्ध का संचालन ही किया वरन् इतिहास साक्षी है कि सेनापति की सूझ-बूझ, वीरता और दुरंदेशी के कारण कई महत्त्वपूर्ण युद्धों मे विजय प्राप्त हुई। ऐसे योद्धा इतिहास में अमर हो गए। वहीं इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि सेनापति की चूक, कायरता और भावुक आचरण ने न केवल युद्धों के परिणाम ही बदल दिए वरन् समूचा इतिहास ही बदल दिया।

इतिहासकार, विद्वान और राजनीति शास्त्रियों ने इतिहास के गहन अध्ययन के बाद युद्धों के लिए जिम्मेदार तीन कारणों को स्वीकार किया है: जर, जोरू और जमीन। बहुत हद तक ये कारण हैं भी परंतु एक बड़े कारण को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है : 'धर्म' (न्याय अधिकार, नैतिकता या आत्मविश्वास)। सत्य और न्याय के लिए जनमानस के हित में लड़े गए युद्ध ही वास्तव में 'धर्म-युद्ध' कहलाते हैं। निःसंदेह रामायण, महाभारत, सिकंदर महान के आक्रमण, पृथ्वीराज चौहान के युद्ध, मुगलों के युद्ध, राजपूतों के युद्ध, यूरोपीय युद्ध, दोनों विश्व युद्ध या भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पीछे कारण जर, जोरू या जमीन ही था। हैनीबल का संघर्ष इन तीनों कारणों से दूर अपने अस्तित्व का अपने स्वाभिमान का संघर्ष था। लिओनाएडस का अपने ३०० स्पार्टन साथियों समेत जर्खसिसि के साथ युद्ध व बलिदान, स्वाभिमान की रक्षा का युद्ध था और इन सबसे आगे सिक्ख गुरु साहिबान के संघर्ष व युद्ध, धर्म की रक्षा के लिए थे, मानव-मूल्यों की रक्षा के लिए और धार्मिक क्षेत्र में वैचारिक स्वतंत्रता के लिए थे, मजलूमों (दमितों, शोषितों, पीड़ितों) का पक्ष लिए हुए अत्याचार के नाश के लिए थे। ऐसे युद्ध ही वास्तव में धर्म-युद्ध हैं।

सिक्ख धर्म के अस्तित्व में आने से लेकर वर्तमान तक का इतिहास सिक्खों को सारे युद्धों के पार्श्व में एक ही कारण दर्शाता है 'धर्म' 'स्वाभिमान' या 'स्वतंत्र विचारधारा'। कोई भी इतिहासकार आज तक सिक्ख संघर्ष को इससे पृथक नहीं कर पाया है। शहादत देना, यातनाएं सहना और युद्ध करना सिक्ख कौम की पहचान बन गए। पंचम पिता की शहादत ने अपने पिछले वर्षों के इतिहास को क्रांतिकारी मोड़ देते हुए सदा-सदा के लिए एक नया संघर्ष आरंभ किया। इसके बाद की घटनाएं क्रमवार पंथ की शक्ल बदलती गईं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का मीरी-पीरी स्वरूप धारण करने तथा श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना आदि करके सिक्खों को जुल्म का डटकर मुकाबला करने के

Room No. 2, Banta Singh Chawl. Opp. Manish Park, Jijamata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, M : 8097310773

Final

लिए तैयार करने के कारण तत्कालीन मुगल सरकार और सिक्खों के बीच संघर्ष बढ़ा और छेवें पातशाह के समय सिक्ख इतिहास का पहला युद्ध हुआ। इसके बाद का सारा सिक्ख इतिहास ही खून की स्याही से लिखा हुआ है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने मदद की पुकार बनकर आए हिंदू धर्म के लोगों के साथ-साथ अन्य सभी शोषित वर्ग की रक्षा के लिए लासानी शहादत देकर दुनिया के इतिहास में एक नई मिसाल पेश की। इसके बाद कलगीधर पिता ने इतिहास को 'संत सिपाही' की नई विचारधारा देते हुए खालसा पंथ की सृजना की। यह बात न तो समकालीन शासन को रास आई और न ही जाति-अभिमानी समाज को, जिसमें रूढ़िवादी तथाकथित उच्चवर्गीय हिंदू भी शामिल थे। तत्कालीन समय से कुछ ही समय पहले उनके धर्म की रक्षा के लिए अपने नौ वर्षों के पुत्र और पत्नी को भी अकेला छोड़कर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपने सिक्खों समेत शहादत दी थी, वे उन्हें भुलाकर अपनी पराधीन मानसिकता को प्रकट करते हुए शासकों से मिलकर गुरु-घर के विरोधी बन गए। कलगीधर पिता ने स्वयं कई महत्त्वपूर्ण युद्ध किए और जीते भी। इतिहास साक्षी है कि गुरदेव पिता ने कभी हमलावर नीति नहीं अपनायी, परंतु अत्याचारियों द्वारा किए आक्रमणों को चुपचाप सहन् भी नहीं किया। भंगाणी के युद्ध में सिक्खों की शूरवीरता के साथ स्वयं गुरदेव पिता की अगुआई और सेनापति वाली सूझ-बूझ ही विजयी रही थी। यह बात विशेष ध्यान देने वाली है कि केवल शारीरिक वीरता बेशक कुछ युद्धों में जीत दिला सकती है परंतु नेतृत्व के बिना, बेकाबू होकर भटक भी सकती है। यह केवल सेनापति की योग्यता, सूझबूझ व दूरदृष्टि ही है जो नैतिकता के सदा विजयी रहने के अमिट इतिहास का सृजन कर सकती है।

चमकौर की गढ़ी में केवल चालीस सिक्खों के साथ बहुत बड़ी शाही फौज का मुकाबला सिक्ख स्प्रिट का जीवंत प्रमाण है। बेशक इस धर्म-युद्ध में अनगिनत सिक्ख शहीद हुए, गुरु जी के दो साहिबज़ादे शहीद हो गए, परंतु संसार के इस सबसे असंतुलित युद्ध में 'धर्म' विजयी रहा और अत्याचारियों को पराजय मिली। गुरु साहिब के बाद के इतिहास में तो सिक्खों ने आस्था और सहनशक्ति की जो परिक्षाएं दीं, जो यातनाएं सहन् कीं और जो बलिदान दिए उनकी मिसाल कहीं और मिलना असंभव है। गुरु साहिब जी ने अपना सब कुछ पंथ पर न्यौछावर करके बड़े गर्व से कहा था :

इन पुत्रन के सीस पर वार दिए सुत चार।
चार मुए तो किआ हुआ, जीवत कई हजार!

अब पंथ की बारी थी और पंथ ने भी हंसते हुए अपना सब कुछ गुरु-चरणों में अर्पित कर दिया। परंतु इस दौर में जो तत्व सबसे महत्त्वपूर्ण था वो था नेतृत्व। इतिहास में इस कसौटी पर खरे उतरने वाले जो उल्लेखनीय नाम हमें मिलते हैं उनमें 'बाबा बंदा सिंघ बहादर' का विशिष्ट स्थान है।

उनसे पहले और उनके बाद भी कई वीर सेनापति हुए हैं, पर जो काम बाबा बंदा सिंघ बहादर ने किया वह सबसे कठिन और दुरूह था। बाबा जी कलगीधर पिता के अनमोल चयन थे जिन्होंने इतिहास में पहली बार सिक्ख राज की नींव रखी। उन्होंने पंथ को अत्यंत नाजुक समय संभाला। बाबा बंदा सिंघ बहादर को पंजाब की ओर रवाना करने के कुछ समय बाद गुरु साहिब जी संसार से प्रयाण कर गए (ज्योति जोत समा गए) थे। ऐसे समय में कौम

Final

बिना नेतृत्व के अनिश्चितता के आलम में जा सकती थी। उन्होंने पंथ को गुरबाणी की छत्रछाया में गुरु साहिबान के नाम पर संगठित किया, सेना को गुरु साहिब जी की व्यक्तिगत अनुपस्थिति में एकत्रित और लामबंद किया। सिक्ख इतिहास में पहली बार मासूम शहादतों के दोषियों को सीधे तौर पर दंड दिया और सदियों से चले आ रहे जालिम राज को समाप्त करने का सफल यत्न किया गया।

बाब बंदा सिंघ का 'सिंघ' सजना (सिक्खी धारण करना) और पंथ के जत्थेदार के रूप में उनका चयन अपने आप में बहुत आत्मिक गहराई वाली घटनाएं हैं जिसका वृत्तांत किसी अन्य संदर्भ में दिया जा सकता है, इस लेख में केवल 'सरहिंद विजय' पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आठ वर्षों के इतिहास से यह साफ हो जाता है कि बाबा बंदा सिंघ बहादर का एक पंथक नेता के रूप में चुनाव करते समय गुरु साहिब जी की विशिष्ट सूझबूझ व दूरंदेशी सोच ही काम कर रही थी। सिक्ख पंथ के प्रमुख इतिहासकार डॉ. गंडा सिंघ के शब्दों में "एक अहिंसात्मक वैरागी को कुछ ही दिनों में 'अमृत' की शक्ति से एक सच्चे गुरसिक्ख और महान शहीदों, योद्धाओं की कौम के नेता में बदल देना एक चमत्कार था।"

सचमुच नांदेड़ की धरती पर जो हुआ वह दशमेश पिता की उच्च दूरदर्शिता का नमूना ही था जिसने बाबा बंदा सिंघ बहादर को इतिहास का महान 'शहीद' बना दिया और खुद बाबा बंदा सिंघ बहादर की ओर से भी आत्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए दी गई ये सब से अनमोल भेंट थी। उन्होंने श्री गुरु अरजन देव जी की इस पंक्ति का एक-एक अक्षर साकार कर दिया :

हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी
अरपी सभि देसा ॥
हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे
जो प्रभ देइ सदेशा ॥ *(पन्ना २८०)*

एक बार अपने आप को गुरु साहिब के चरणों पर अर्पित करने के बाद तो दुख, तकलीफें, यातनाएं और यहां तक कि मौत भी इस मरजीवड़े को नहीं डुला सकी। गुरदेव पिता की कृपा-दृष्टि के साथ उनके द्वारा बख़्शे हुए पांच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और कुछेक सिंघों की आरंभिक सेना लेकर वह सेनापति वक्त के सबसे सशक्त और अत्याचारी शासन से लोहा लेने, आंखों में गुरु साहिब जी के सपनों को संजो कर महाराष्ट्र से पंजाब की ओर चल पड़ा। आठ साल में गुरदास नंगल की गढ़ी तक कई हज़ार सिंघों के विशाल सैन्यसमूह तक की यात्रा कोई गुरु जी की बख़्शिश वाला व्यक्ति ही कर सकता था।

दिल्ली तक की अपनी मुहिम में कई रुकावटों, कष्टों का सामना करते हूए वे दिल्ली तक पहुंच गए और यहीं से उन्होंने पंजाब और खासकर माझे, मालवे के सिक्खों को गुरु साहिब के हुकमनामे भेजे व एकत्रित होने के लिए कहा। इसी दौरान बाबा जी का मुगलों से पहला सामना सोनीपत में हुआ और इसके तुरंत बाद उन्होंने समाणा और सढौरा को भी जीत लिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी व छोटे साहिबज़ादों के हत्यारे जल्लादों को भी दंड दिया। इन सफलताओं के बाद बाबा जी ने सरहिंद पर आक्रमण की तैयारियां आरंभ कर दीं। मुगल काल में दिल्ली से लाहौर तक के रास्ते में सरहिंद सबसे बड़ा शहर था इसलिए इसे विशेष योजनाबद्ध रूप निर्मित किया गया

था। प्राय: सभी शाही अधिकारियों व पदाधिकारियों के भव्य निवास यहां थे, वज़ीर ख़ान के याहं आकर बसने से इस नगर के विकास पर और भी अधिक ध्यान दिया गया था, पर जिस दिन से मासूम साहिबज़ादों को जिंदा ही दीवार में चिनवाकर, माता गुजरी जी सहित शहीद किया गया, उस दिन से सिक्ख इसे 'गुरु मारी सरहिंद' कहने लगे। आम लोग भी डरे-सहमे रहते और जिस दिन से सब ने बाबा बंदा सिंघ बहादर के दक्खण से कूच का समाचार सुना, एक अनजाना-सा डर हर ओर फैलने लगा था। सबसे अधिक डरा हुआ था स्वयं वजीर ख़ान। बेशक बाहरी तौर पर वह कितनी ही शेखी क्यों न मार ले, पर कहते हैं 'पापी के मारने को पाप महाबली है', ठीक उसी तरह वह बाबा बंदा सिंघ द्वारा समाणा, सढौरा, सोनीपत आदि की जीतों के समाचार सुन कर भीतर ही भीतर डरता रहा। हर समय सरहिंद पर एक आतंक-सा छाया रहता। इतिहासकार मुहम्मद लतीफ जैसे मुसलमान भी लिखते हैं कि आधी-आधी रात को नींद से जागकर वज़ीर ख़ान बड़बड़ाने लगता : "बंदा आया, बंदा आया"। यही दशा दुष्ट सुच्चानंद सहित अन्य दरबारियों की भी थी।

मालवे, माझे और अन्य सभी दिशाओं से आये सिंघों से मिलने के बाद बाबा जी ने बड़े ही ठहराव से तैयारियां शुरू कीं क्योंकि गुरदेव पिता के अवसान के बाद यह पहला अवसर था जब खालसा इतनी विशाल गिनती में एकत्रित हुआ था। यह ऐसा अवसर था जब सिक्खों ने गुरु साहिबान के बाद पहली बार गुरु-ग्रंथ, गुरु पंथ की अगुआई में नए सिरे से अपनी मर्यादाओं को निर्धारित करना था, बिना किसी एक आज्ञा के, सोच-समझ कर सर्व-सम्मति से निर्णय लेने थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर अपनी दूरदृष्टि के कारण इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि यही अवसर है पंथ को एकजुट कर, भविष्य के लिए नई मिसाल कायम करने का, इसलिए पंथ को एकजुट करने के लिए किसी ठोस मकसद की आवश्यकता थी। सरहिंद पर चढ़ाई एक ऐसा मकसद था जो सबके लिए सांझा था। इसके बाद पंथ को एकजुट करने का ऐसा ठोस कारण कदाचित ही मिलता। इसलिए बाबा बंदा सिंघ बहादर सरहिंद पर आक्रमण को निर्णायक व यादगारी बनाना चाहते थे, साथ ही वे शत्रु को भी तैयारी का पूरा मौका देना चाहते थे, जिससे उसके मन में हार के बाद भी मलाल न रह जाए और साथ ही वे अपने पास जमा हो चुकी सेना की कुशलता को भी परखना चाहते थे।

इसलिए सरहिंद पर चढ़ाई से पहले बाबा बंदा सिंघ बहादर ने पहली बार सेना को लामबंद कर अलग-अलग दसतों में बांटा। पूरे आक्रमण की योजना विशेष रूप से बनाई गई, साथ ही वे वज़ीर खान की तैयारियों का भी निरीक्षण करना चाहते थे। उसके पास उस समय तक १५ हज़ार वेतनभोगी सेना थी, परंतु उसने इससे भी बहुत अधिक गिनती में इस्लाम के नाम पर गाजियों को इकट्ठा कर लिया था। लगभग ३५-४० हजार की फौज के साथ-साथ उनके पास बहुत बड़ी गिनती में घोड़े, हाथी, शस्त्र और ५० तोपें भी थीं। दूसरी ओर बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास लगभग १० हजार सिक्ख एकत्रित हो चुके थे।

युद्ध-कला के दृष्टिकोण से यदि युद्ध का सर्वेक्षण किया जाए तब भी बाबा बंदा सिंघ बहादर की जन्मजात प्रतिभा स्पष्ट रूप से सामने आती है। अपने जीवन का पहला बड़ा युद्ध लड़ रहे थे। नांदेड़ से पंजाब तक की

यात्रा में हुए सामने युद्ध स्तर के नहीं थे। समाणा, सढौरा आदि जीतें बेशक सिक्खों का आत्मविश्वास कायम रखने में सफल रही हों परंतु अभी तक बाबा बंदा सिंघ बहादर का सामना अपने स्तर के किसी सेनापति से नहीं हुआ था। सरहिंद की मुहिम की बात और थी, यहां सामना था सदियों से अत्याचार सहन् कर रही सिक्ख कौम और अत्याचारी मुगलों के बीच उन मुट्ठी भर सिक्खों का जिनका औपचारिक सैनिक प्रशिक्षण मुगलों के मुकाबले न के बराबर था और उस शाही फौज के बीच जो अपने बाहुबल से सारे देश पर राज कर रही थी। यह सामना था सिक्खों के साधारण शस्त्रों व अल्पसंख्यक घोड़ों और शासकों के उस समय में आधुनिक कहला सकने योग्य अस्त्र-शस्त्रों, तोपों और हाथी-घोड़ों के अनंत भंडार के बीच। यह सामना था धर्म और अधर्म के बीच और सबसे ज्यादा मुकाबला था हाल ही में सिंघ सजे बाबा बंदा सिंघ बहादर और वज़ीर ख़ान के बीच, जिसकी सैनिक प्रतिभा का लोहा दिल्ली सरकार भी मानती थी।

मई, १७१० ई को खालसई सेना सरहिंद पहुंच गई। सरहिंद से कछ दूरी पर चपड़चिड़ी के खुले मैदान में बाबा जी ने सिक्खों समेत पड़ाव डाला। इस मैदान के पास ही मध्यम आकार के वृक्षों की भरमार थी जिसमें पानी का एक छोटा ताल और एक छोटा टिल्ला भी था जिसे वजीर खान ने नजरंदाज कर दिया था। यह एक सेनापति के रूप में की गई उसकी पहली बड़ी भूल थी, जिसे पहली नजर में ही बाबा बंदा सिंघ बहादर ने भांप लिया था। उन्होंने उस ताल और टिल्ले को युद्ध के समय सैन्य संचालन का केंद्र बनाया। यह वाकई बाबा बंदा सिंघ बहादर की सेनापति वाली सूझबूझ का ही निर्णय था। इतिहास साक्षी है कि कई सेनाएं केवल पानी की कमी के कारण युद्ध में मात खा गईं। युद्ध के समय एक-एक बूंद पानी का अपना महत्त्व है और इस बात को अनंदपुर साहिब के घेराव के बाद सिक्ख भली-भांति समझ चुके थे और टिल्ला अपनी ऊंचाई के कारण युद्ध के समय सेनापति द्वारा सेना के निरीक्षण के लिए सपाट मैदान से अधिक लाभदायक था।

जैसा कि पहले ही दोनों सेनाओं की तादाद का विवरण दिया जा चुका है, स्पष्ट है कि वज़ीर ख़ान के पास ताकत ज्यादा थी, वह हमला करके स्थिति को अपने हित में पलटाने की कुछ संभावना अवश्य रखता था। यह सैनिक दृष्टिकोण से वजीर खान की दूसरी बड़ी भूल थी कि वह सरहिंद में बैठा सिक्ख सेना की प्रतीक्षा करता रहा, जबकि खालसई सेने के हर कदम का समाचार उसे उसके गुप्तचरों द्वारा मिल रहा था। युद्ध-कला का इतिहास गवाह है कि आक्रमणकारी हमेशा ही रक्षक नीति अपनाने वाले के मुकाबले जीत के ज्यादा पास होता है। पहली बात तो उसमें सामने वाले से अधिक आत्मविश्वास होता है, दूसरी बात कि आक्रमणकारी के पास हमेशा दो रास्ते होते हैं, पहला तो आक्रमण करके विरोधी को सीधा जीत ले और यदि उसका पक्ष आक्रमण में कमज़ोर भी पड़ने लगे तो भी उसके पास बचाव का रास्ता खुला है, परंतु रक्षक नीति अपनाने वाले के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं होता। इसके बावजूद भी वज़ीर ख़ान ने रक्षक नीति अपनाई और बाबा बंदा सिंघ बहादर ने आक्रमणकारी नीति। ऐसा निर्णय एक प्रतिभा वाला बेधड़क सेनापति ही ले सकता है।

खालसई सेना चपड़चिड़ी पहुंच चुकी थी। युद्ध से पूर्व बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सेना का

सूक्ष्म निरीक्षण किया और योजनाबद्ध रूप से उसे चार प्रमुख भागों में बांटा, जिसमें से दाहिनी ओर गाजियों के सामने भाई बाज सिंघ की कमान में माझे व दोआबे के सिंघों को रखा, बायें भाग में मलेरकोटलियों के सामने भाई फतह सिंघ की अगुआई में मालवे के सिंघों को तैनात किया। तीसरे भाग के रूप में भाई काहन सिंघ की कमान में पंजाब व अन्य क्षेत्रों से आए छोटे-छोटे दसतों को रखा गया इनके साथ ही गंडा मल (सुच्चानंद का भतीजा) व उसके एक हजार साथियों को रखा जिन पर बाबा बंदा सिंघ बहादर को बिलकुल भरोसा नहीं था। यह भी उनकी सेनापति वाली सूझबूझ का कमाल था जो उन्होंने गंडा मल, उसके हजार साथियों को दूसरे दसतों के ठीक बीच में रखा, जिससे यदि वे भागना भी चाहें तो आसानी से भाग न सकें। युद्ध से पहली रात बाबा बंदा सिंघ बहादर का योजना अनुसार सिंघों का एक छोटा दसता कई बार जैकारे बुलंद करता हुआ वज़ीर ख़ान के खेमों पर धावा बोल चुका था। यह हमला अकारण ही शत्रु को कच्ची नींद से जगाकर युद्ध से पहले ही थका देने की बाबा जी की अचूक नीति का ही एक हिस्सा था। चौथे भाग के रूप में एक हज़ार सिक्खों के आपातकालीन अतिरिक्त बल, जिसे बाबा जी ने संकट सेना का नमा देते हुए अपने साथ लेकर टिल्ले को अपना केंद्र बनाया।

वज़ीर ख़ान ने अपनी सारी तोपों को एक की पंक्ति में सिक्ख सेना के आक्रमण की दिशा में मुंह करके जड़वा दिया। यह वज़ीर ख़ान की तीसरी बड़ी भूल थी। सारी तोपों को एक ही ओर तैनात करके उसने उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया, क्योंकि यदि सिक्ख उससे बच जाते, जैसा कि हुआ, तो दूसरी ओर उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था, परंतु यदि तोपों को रास्ते के दोनों ओर तैनात किया जाता तो सिक्खों को इस दोतरफा मार से निश्चय ही बहुत हानि होती। साथ ही उसके पास २०० हाथी भी थे जिसे उसने दीवार की भांति सबसे पहली कतार में खड़ा कर दिया और अपने आप को उनके पीछे सुरक्षित समझने लगा।

चपड़चिड़ी का निर्णयक युद्ध आरंभ हुआ। वजीर ख़ान के बहुत-से सिपाही रात की कच्ची नींद टूटने के कारण बदहवास थे, जबकि खालसई सेना ताजा दम थी। आक्रमण के लिए सिक्ख सेना की ओर से जैकारे बुलंद हुए ही थे कि वज़ीर ख़ान के तोपचियों ने आगे से अंधाधुंध गोला-बारूद दाग दिया। गोले जंजीरी थे और सिक्ख सेना उनके दायरे से दूर थी, इसलिए बहुत सारे गोले वृक्षों में उलझ कर बेकार हो गए। खालसई सेना को बहुत कम हानि हुई। बाबा जी ने कुछ सिक्खों का एक दस्ता एक विशेष काम के लिए तैयार किया था। इस टुकड़ी ने तोपचियों पर निशाना साधते हुए पहले ही हल्ले में सारी तोपों को अपने वश में कर लिया। वज़ीर ख़ान अपने इस गलत निर्णय के कारण पहले ही हल्ले में मात खा गया था सिक्ख सेना के इस दसते ने अब तोपों की सहायता से हाथियों की रक्षक पंक्ति को तोड़ना आरंभ किया और इसमें वे सफल भी रहे। वज़ीर ख़ान की अपनी तोपों ने उसकी रक्षक पंक्ति को तोड़ कर उसे सीधे युद्ध के लिए विवश कर दिया। यह सेनापति के रूप में बाबा बंदा सिंघ बहादर की दूरंदेशी सोच का ही कमाल था।

आमने-सामने का युद्ध बड़ा ही घमासान था। दोनों पक्षों के योद्धाओं के बहते लहू से धरती लाल हो रही थी। दोपहर चढ़ने तक गर्मी चरम पर पहुंच चुकी थी। दोनों ही पक्ष जान

की बाजी लगाकर लड़ रहे थे। ठीक उसी समय संशय अनुसार गंडा मल अपने साथियों समेत वज़ीर ख़ान की सेना में मिल गया। हालात अब सिक्खों के लिए बदतर हो रहे थे, शस्त्रों की कमी ने परेशानी और बढ़ा दी थी। जो केवल लूट के इरादे से खालसई सेना में आए थे, अब युद्ध-भूमि को पीठ दिखाकर भाग गए। सूरज ढलने लगा था। कई घंटों से लगातार युद्ध करते हुए दोनों ही ओर के सैनिक भूखे-प्यासे थे, वे थक कर टूट चुके थे। बाबा बिनोद सिंघ टिल्ले पर बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास आए व युद्ध के हालात की जानकारी देते हुए युद्ध समाप्ति की आज्ञा के लिए प्रतीक्षा करने लगे। प्रख्यात उपन्यासकार स. नरिंदरपाल सिंघ के शब्दों में उस समय बाबा बंदा सिंघ बहादर ने उत्तर दिया, "खालसा जी! यही विजय की बेला है, अब घंटों का नहीं पलों का खेल बाकी है।" यह भी युद्ध इतिहास की एक अटल सच्चाई है कि युद्ध हमेशा ही बराबरी की सेनाओं में संभव होता है, कमजोर और ताकतवर के बीच तो युद्ध ठहर ही नहीं सकता। बराबरी के समय जो दूसरे से कुछ क्षण अधिक लड़ ले वही विजयी है।

बाबा जी ने कलगीधर पिता का प्रदान किया हुआ एक तीर निकाला और वज़ीर ख़ान की सेना की ओर चलाकर अपने लिए रास्ता बनाया, साथ ही बची संकट सेना को लेकर युद्ध में आ गए। यह वाकई सेनापति की सूझबूझ का निर्णय होता है कि उसे युद्ध-भूमि में किस समय कहां रहना चाहिए। वज़ीर ख़ान अपनी सेना की कमान संभालने की बजाए स्वयं हाथी पर बैठा लड़ रहा था। उसकी विशाल सेना युद्ध के हालात देखकर स्वयं निर्णय लेने के लिए विवश थी, जबकि बाबा बंदा सिंघ बहादर ने निर्णय अपने हाथ में रखा था और खालसई सेना को उन पर पूरा भरोसा था। बाबा बंदा सिंघ बहादर के युद्ध-भूमि में आते ही हर ओर "बंदा आया, बंदा आया" का कोहराम मच गया। उस समय तक बाबा जी शाही सैनिकों के लिए एक भय, आतंक का प्रतीक बन चुके थे। 'बंदा आया' का हऊआ अथवा आतंक ही किसी जीत रही सेना को हराने और हारती हुई सेना को जिताने के लिए पर्याप्त था और हुआ भी ठीक वही। खालसई सेना में चमक व ताजगी आ गयी और भारी पड़ती मुगल सेना डर कर पीछे हटने लगी। वज़ीर ख़ान का पुत्र समुंद खान व सिपाहसालार अब्दुल समद मारे गए। अंत में भाई फतह सिंघ ने अपने घोड़े पर खड़े होकर हाथी पर बैठे वज़ीर ख़ान का सिर काट दिया। साहिबज़ादों की मासूम शहादत का दंड वज़ीर ख़ान को मिल चुका था। उसके मरते ही बची मुगल सेना भाग खड़ी हुई। एक ही दिन में समाप्त हुए इस युद्ध में सरहिंद की निर्णायक विजय सिक्खों के हाथ रही और अत्याचारी शासन को करारी हार का सामना करना पड़ा। बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में सिक्ख सेना गुरु साहिब के बाद पहला महत्त्वपूर्ण युद्ध जीत चुकी थी, जिसने आने वाले भविष्य के लिए सैनिक प्रतिभा की अमिट छाप छोड़ी।

केवल विजय प्राप्त कर लेने से सेनापति का दायित्व समाप्त नहीं हो जाता। प्राय: विजय के उन्माद में सेनाएं सभ्यता की सीमाएं लांघ जाती हैं, इतिहास इसका साक्षी है, परंतु बाबा बंदा सिंघ बहादर सिक्ख सेना को आने वाले समय में गुरदेव पिता के मिशन के लिए तैयार कर रहे थे, इसलिए वे किसी भी कीमत पर उनमें अनुशासन कायम रखना चाहते थे। उन्होंने खालसई सेना को सरहिंद में जाने की

आज्ञा नहीं दी। उस दिन घायलों की सेवा-संभाल व शहीदों का अंतिम संस्कार किया गया। यह एक कठिन परीक्षा थी जिसे गुरु के भरोसे उन्होंने आजमाया था। उस दिन सिक्ख सेना न केवल धैर्य की कठिन परीक्षा में सफल हुई वरन् उन्होंने जत्थेदार पर विश्वास की नई मिसाल भी कायम की। अब बाबा बंदा सिंघ बहादर को भी इस बात का आश्वासन था कि खालसा बिखरेगा नहीं। वाकई गुरु साहिब जी के नाम पर और सरहिंद जैसी विजय से पंथ को एकजुट करने में बाबा बंदा सिंघ बहादर सफल हुए थे।

खालसई सेना सरहिंद में दाखिल हुई। दुष्ट सुच्चानंद सहित अन्य दोषियों को योग्य दंड दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर का आदेश था कि किसी भी धार्मिक स्थल को हानि न पहुंचाई जाए, अत: सिक्ख सेना ने इसका पालन करते हुए केवल उन्हीं अधिकारियों व लोगों के घर गिराए जो या तो माता गुजरी जी व साहिबज़ादों की शहादत में शामिल थे या किसी न किसी रूप में सिक्खों के विरुद्ध मुहिम में थे। सरहिंद की जीत के बाद बाबा जी ने और भी कई इलाकों को जीता। सरहिंद की जीत के बाद बाबा जी ने सिक्ख राज की नींव रखी व लोहगढ़ को राजधानी बनाया गया। इस राज को स्वतंत्र व संपूर्ण बनाने के लिए सारे जरूरी कदम उठाए गए। सबसे पहले उन्होंने गुरु साहिबान के नाम पर खालसई सिक्का ढाला। यह बात ध्यान देने वाली है कि खालसा राज सरहिंद की विजय के बाद अस्तित्व में आया, जिसका पूरा श्रेय बाबा बंदा सिंघ बहादर को जाता है। उन्होंने एक सच्चे एक सिक्ख होने का प्रमाण देते हुए खालसा राज को गुरु-चरणों पर अर्पित कर दिया। यही कारण है कि सिक्कों पर उनका अपना नाम कहीं दिखाई नहीं देता। यह सिक्का श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर ढाला गया था। उस पर अंकित शब्द थे :

सिक्का जद्द बर दो आलम
तेग नानक वाहिब अस्त।
फतह गोबिंद सिंघ शाह शाहां
फजल सच्चा साहिब अस्त।

इसके बाद सरकारी पत्र-व्यवहार के लिए गुरु साहिबान के नाम पर ही खालसई मोहर भी ढाली गई और सरहिंद की विजय से ही नया संवत् भी आरंभ किया गया।

सरहिंद की विजय से पहले हुए ऐतिहासिक युद्ध सिक्ख पंथ का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हैं। वे सरकार के लिए चुनौती थे कि अब सिक्ख अत्याचार का सामना करेंगे, निरीह गऊ की भांति उसे सहन नहीं करेंगे। सरकार अवश्य ही चौकन्नी हो गई, पलटवार भी किए परंतु वह सिक्खों से कभी इतनी ज्यादा चिंतित नहीं हुई थी जितनी अब थी। सिक्खों के पास शस्त्रों व सैनिकों की गिनती हमेशा ही उनसे बहुत कम थी। यह स्वयं सिक्खों के लिए भी युद्ध प्रशिक्षण व संगठन का काल था। उन युद्धों के कारण भी धार्मिक ही रहे। हां, खालसा सृजन के बाद पहली बार सरकारी भय और उनके समर्थक हिंदू राजाओं की चिंता साफ नज़र आई। सन् १७०४ में अनंदपुर साहिब पर हुआ मिला-जुला हमला इसी का प्रमाण है। बेशक नैतिक रूप से (धार्मिक रूप से) खालसा पंथ की दो टुक जीत हुई थी, मगर उनके अनुसार उन्होंने गुरु-परिवार को समाप्त कर दिया था, सिक्खों की शक्ति गुरु साहिब जी की अनुपस्थिति में समाप्त हो चुकी थी। उनके अनुसार वे अजेय थे।

सरहिंद की जीत सरकारी सीने पर पहली करारी चोट थी। दिल्ली से लाहौर तक के

Final

बीच सरहिंद ही सबसे शक्तिशाली सूबा था जिसका केवल एक दिन के युद्ध में ही विध्वंस कर दिया गया था और वह भी उन सिक्खों द्वारा जो उनकी दृष्टि में पूरी तरह प्रशिक्षित भी नहीं थे। सरहिंद की जीत एक कभी न हारने वाले समझे जाते अत्याचारी सेनापति पर एक नौसिखिए सेनानायक की जीत थी जो अभी कुछ समय पहले तक किसी जीव तक को मारने से संकोच करता था। यह जीत ऐतिहासिक महत्त्व भी रखती थी। यही कारण है कि ज़ालिम सरकार बौखला गई।

इससे पहले कि कुछ कदम उठाते, बाबा बंदा सिंघ बहादर की मुहिम बिजली की गति से सारे उत्तर भारत में फैलने लगी थी। बाबा जी ने सरकारी छत्रछाया में फल-फूल रही पुरातन जमींदारी व्यवस्था पर कड़ा प्रहार करते हुए उसे जड़ से ही समाप्त करने का प्रयास किया। जमींदारों के अधिकारी को नियंत्रित करते हुए श्रमिक किसानों को भूमि का स्वामी बनाया। इस मुहिम का नाम मात्र ही उल्लेख यहां किया गया है। संपूर्ण विवरण के लिए पृथक लेख की आवश्यकता पड़ेगी। सरहिंद की जीत के बाद सिंघों की मुहिमें सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गईं। सरकार बाबा बंदा सिंघ बहादर के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। अंत में सन् १७१५ में गुरदास नंगल की गढ़ी से उन्हें बंदी बनाकर ७०० सिंघों समेत, जून १७१६ में दिल्ली में बड़ी कठोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। यह शहादत का प्रसंग सिक्ख इतिहास का लासानी पन्ना है। इसकी चर्चा अन्यत्र की जा सकती है। बेशक ज़ालिम शासकों ने शारीरिक रूप से बाबा बंदा सिंघ बहादर को शहीद कर दिया परंतु जो इतिहास इन आठ वर्षों में वे संसार को दे गए वो अमिट हैं। आठ वर्षों में उन्होंने ऐसा शक्तिशाली नेतृत्व कौम को दिया कि पंथक उभार दृष्टिगोचर हुआ। गुरु साहिबान के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सरप्रस्ती और एक सशक्त जत्थेदार के नेतृत्व में यह पहला सबसे अहम मिशन था जिसे खालसा जीत चुका था, क्योंकि उसे जत्थेदार ही ऐसा बेजोड़ मिला था। खालसा पूर्णतः एकजुट हो गया था। आगे सिक्ख इतिहास के ७०-८० सालों में पंथ ने जिस कठिन समय का सामना किया और जो लासानी शहादतें दीं उसकी प्रेरणा उन्हें गुरु साहिबान से ही मिली थी। जहां आध्यात्मिक शक्ति गुरबाणी से मिली, बलिदान की भावना गुरु साहिबान के जीवन से प्राप्त हुई, रहन-सहन, मर्यादा, संगठन की युक्ति व अत्याचारी को सबक सिखाने की तीव्र उत्कंठा गुरु के अनिन सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादर से मिली थी। इतिहास में सरहिंद पहला बड़ा शहर था जिसे सिक्खों ने आक्रमणकारी नीति अपना कर खत्म किया था। इतिहास में पहली बार मासूम शहीदों के दोषियों को सीधा दंड दिया गया था। सरहिंद पर सिक्ख कौम की जीत ने मुगलों के अजेय होने की भ्रांति को समाप्त कर दिया। इस एक युद्ध ने महान सेनानायक के रूप में बाबा बंदा सिंघ बहादर को सदा के लिए इतिहास के पन्नों में अमर कर दिया।

सरहिंद की विजय ने स्वतंत्र सिक्ख राज्य के स्वप्न को साकार किया। सरहिंद की विजय ने सिक्खों के छुपे हुए अंतर्बल को एक बार फिर दुनिया के सामने रखा तथा सरहिंद की विजय ने ही विश्व के इतिहास को और विशेष रूप से सिक्ख इतिहास को बाबा बंदा सिंघ बहादर के रूप में एक अनुपम योद्धा व महान सेनापति दिया।

Final

छोटा घल्लूघारा

*-सिमरजीत सिंघ**

मानवता के लिए हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए सिक्खों को अत्यंत यातनाएं सहन करनी पड़ीं। इसी लड़ाई के अधीन जब-जब सिक्खों को बड़ी संख्या में जानी-माली नुकसान का सामना करना पड़ा, उन घटनाओं को 'घल्लूघारे' के नाम से याद किया जाता है। सन् १७४६ ई में सिक्खों को जब इसी तरह बड़ी संख्या में शहीद किया गया उसको 'छोटा घल्लूघारा' कहा जाता है। यह घल्लूघारा मार्च महीने से आरंभ होकर मई महीने तक निरंतर चलता रहा।

लाहौर के सूबेदार ज़करिया ख़ान ने भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतारकर शहीद करवा दिया। उसके बाद ज़करिया ख़ान बड़ी भयानक मृत्यु मरा। ज़करिया ख़ान की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्रों में झगड़ा हो गया। झगड़े के कारण हकूमत में आई गिरावट से सिक्खों ने लाभ लेने हेतु लाहौर की ओर कूच किया। इतिहासकार डॉ. हरी राम गुप्ता के अनुसार सिक्खों ने नौशहिरे तथा मजीठा के स्थानों पर हमला करके साहिब राय, रामा रंधावा, करमा छीना, हरभगत निरंजनिया, काज़ी अहमद ख़ान खोखर, शमशीर ख़ान तथा कुछ अन्य चौधरी जो सरकार की मदद तथा मुखबरी करते थे, को इसी समय सोधा गया। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया "तेग खालसा" में लिखते है :

जेहड़े सिंघां नूं नित फडांवदे ते एसे गल दा खटिआ खाण भाई।
ओह सिंघां दी हिक्क ते रड़कदे सन सिंघ चिरां तो चेला तकान भाई।
रब ढब लाया सिंघां झट कीता चुण मुखबरां तईं मुकान भाई।
घर घाट लुटे उन्हां पापीआं दे जदां मारीआं कर वैरान भाई।
साहिब राइ नौसेरीआ मारिआ जा कीता रामे रधावे दा घान भाई।
धंधाकर नरंजन हरभगत वाला, फाज़ल ऐमद दा पूर लंघान भाई।
कीते कतल मजीठीए गिल जा के शमशर पोखर कतलाम भाई।
मोहरू पकड़ के मारिआ उठीआं ते बहुत होर भी पार बुलान भाई।
एसे तरां सिंघां चुण चुण मारे वैरी चुगल बड़े बेईमान भाई।
डर पै गिआ आणके विच पिंडां डर गए हिंदू मुसलमान भाई।
कोई करे न मुखबरी खालसे ते हाकम पए भावें लोभ पान भाई।

सिक्खों के जत्थे स. शाम सिंघ नारोवाल, स. बाज़ सिंघ हलोकिआं, स. करम सिंघ पैजगड़िया, स. गुरदिआल सिंघ डल्लेवालिया, स. गुरबख़श सिंघ कलसिया, स. हरी सिंघ भंगी, स. चढ़त सिंघ, स. चंदा सिंघ शुक्रचक्क, स. धरम सिंघ, स. काला सिंघ, स. खिआला सिंघ (कंग), स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. छेजा सिंघ पंजवड़िया, स. हरी सिंघ, स. भोमा

*उप सचिव/मुख्य संपादक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६

Final

सिंघ, स. जै सिंघ, स. हीरा सिंघ, स. सदा सिंघ नकई, स. मदन सिंघ, स. वीर सिंघ आदि स. कपूर सिंघ की जत्थेदारी तले ज़ालिमों को सोधते हुए देश का दौरा कर रहे थे। सिंघों के जत्थे घूमते-घुमाते ऐमनाबाद के समीप आ गए। यहां सारे जत्थों ने सलाह की कि थोड़े दिनों तक वैसाखी का दिवस आ रहा है, इस बार वैसाखी गुरुद्वारा रोड़ी साहिब में मनाई जाए। ज्ञानी करतार सिंघ जी कलासवालिया लिखते हैं :

एसे तरां सिंघ देस दी सैर करदे दौरा कर आए दुले बार दा जी।
गुजरां वाले दा ज़िले विच आन वड़े रंग वेखदे फिरन संसार दा जी।
ऐमनाबाद अगे नेड़े आ गिआ जी कीता हर इक सरदार दा जी।
तिंनां दिनां नूं मेला वसाखी दा ए दरस कर चलो दरबार दा जी।
डेरे ला बैठे रोड़ी साहिब गिरदे बिसराम मिलया दिन चार दा जी।
एथे छिड़ेगी छेड़ करतार सिंघा एसे तरां सी हुकम करतार दा जी।

सिक्खों के जत्थे वैसाखी मनाने के लिए रोड़ी साहिब, ऐमनाबाद पहुंच गए। जब यह ख़बर लाहौर पहुंची तो यहिया ख़ान के दीवान लखपत राय ने अपने भाई जसपत राय को खास हिदायतें भेजीं। जसपत राय ऐमनाबाद का फौजदार था। जसपत राय ने सिक्खों पर चढ़ाई कर दी। सन् १७४६ ई में लाहौर की शाही सेना का मुकाबला सिक्खों के साथ हो गया। घमासान युद्ध में भाई निबाहू सिंघ रंघरेटा हाथी की पूंछ पकड़कर जसपत राय के हाथी पर चढ़ गया। भाई निबाहू सिंघ ने होदे में बैठे जसपत राय का सिर कृपाण से एक ही झटके में धड़ से अलग कर दिया। शाही सेना मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई। भाई रत्न सिंघ (भंगू) 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में इस घटना के बारे में लिखते हैं :

जिस दिन जसपति मार सु लयो, सिंघन टूट दरिद्र गयो।
एमनाबाद भी शहर सु टूटा, उह भी खालसे अच्छो लूटा।
बहुत ख़ज़ाना था तिस साथ, लागयो भूखे सिंघन हाथ।
तौ फिर राजन राजा जापैं, दीसै भूपति नांहि सिझापैं।

जब लाहौर के दीवान लखपत राय को अपने भाई की मृत्यु की ख़बर पहुंची तो वो गुस्से में पागल हो गया। उसके सूबेदार यहीआ ख़ान के पावों में अपनी पगड़ी रखकर कहा, "जब तक मैं सिक्खों का नामो-निशान नहीं मिटा देता, सिर पर पगड़ी नहीं बाधूंगा!" भाई रत्न सिंघ (भंगू) इस घटना का ज़िक्र 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में करते हुए लिखते हैं :

यही बात लखपति सुनी, ढिग नवाब दई पग डार।
फेर आन मैं बंधोंगो, सिंघन को पंथ गार।
यह परतग्गया खत्री करी, मारो सिंघ चढ़ इत ही घरी।
ऐस बचन सुन नवाब उचारा, खरचो दरब लै मेरा सारा।
इस घटना का ज़िक्र ज्ञानी ज्ञान सिंघ 'पंथ प्रकाश' में करते हुए लिखते हैं :
जब सिंघों ने जसपत मारा।
लुटिओ एमनाबाद निहारा।
लखपत जाइ बिजे खां पास।
पगड़ी सिरों उतारी खास।
कसम उठाइ कहयो इम खीज।
मै जब लौ सिंघहि निरबीज।
नहि कर लैहो तब लौ जाण।

पगड़ी धरनी सिर मुहि आण।

लखपत राय ने प्रतिज्ञा की कि वह सिक्खों का बीज़ नाश करके ही दम लेगा। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया 'तेग खालसा' में लिखते हैं :

जदो नास कर लवांगा खालसे दा
पग सिर उते तदों धरांगा मैं।
फौज दे मैंनू एसे वकत जंगी बी
नास हुण सिंघां का करांगा मैं।
एहनां दुखी कीता बादशाही ताईं
जड़ी इन्हां दी तेल हुण भरांगा मैं।
एह पंथ रचाइआ खतरी ने
हुण खतरी एस नूं हरांगा मैं।
जदों रहेगा सिंघ दा नाम नाहीं
परत तद लाहौर विच वड़ांगा मैं।
भरे जोर दे नाल करतार सिंघा
दीनी वैरीआं दे नाल लड़ांगा मैं।

उसने लाहौर के सूबेदार यहिया ख़ान की संमिति से लाहौर की फौजों को लामबंद कर लिया और मुलतान, बहावलपुर तथा जलंधर से भी फौजी मदद मांगी। इसके अतिरिक्त पहाड़ी रियासतों के राजाओं को भी सुचेत कर दिया कि सिक्खों को पहाड़ों की तरफ न आने दिया जाए। दीवान लखपत राय ने लाहौर में बसते सारे सिक्खों को पकड़कर कत्ल कर देने का हुक्म भी दे दिया। सूबे के कुछ समझदार अहिलकारों जो सिक्खों से हमदर्दी रखते थे ने एक वफ़द बनाया। इस वफ़द में दीवान कौड़ा मल, दीवान लच्छी राम, दीवार सूरत सिंघ, भाई देस राज आदि शामिल थे। इस वफ़द ने गोसांई जगत भक्त की अगुवाई में लखपत राय ने विनती की जाती है कि वो बेकसूर सिक्खों का कत्ल न करे क्योंकि उस दिन मोसवार की अमावस का दिवस था। लखपत राय पर उस वफ़द की विनती का कोई असर न हुआ। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया इस घटना का ज़िक्र 'तेग खालसा' में इस तरह करते हैं :

पैंचा आखिआ गल एह बहुत माड़ी
जुलम कीतिआं देश न वसिआ ए।
हिंदू हो के तुसीं विचारदे नहीं
लक पाप उते काहनूं कसिआ ए।
एस पाप दा फल है दुख बहुते
एह दीवान साहिब असां दसिआ ए।
जे कर कत्ल करने कल्ह कर देहो
अज सोमवती वेखो मसिआ ए।
पैंच आख थक्के मन्नी इक न हीं
नक चाढ़के ते सगों हसिआ ए।
बुरे बुराही करन करतार सिंघ,
धरम दैया पापी पासों नसिआ ए।

उसने नगाड़ा बजाकर लोगों को सूचना दी कि कोई भी व्यक्ति 'गुरु' शबद का उच्चारण न करे। जो ऐसा करेगा उसको मृत्यु की सज़ा दी जाएगी। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया के अनुसार :

डौंडी विच लाहौर फिराई सारे
सिख गुरू दा नाइ सदाइ कोई।
ओहदा घण बचा घाणी पीड़ देवां
घर ग्रंथ जे लिआ खुलाइ कोई।
कतल होवे जां जाइगा तुरक कीता
जिहड़ा गुरू दा नाम सुनाइ कोई।
रोड़ी अज तो आखना सुनो सारे
गुड़ नाम न मूल बुलाइ कोई।
पहिरे ला दिते थां थां उते
गुर पुरब न हुण मनाइ कोई।
पाप कर लौ रज करतार सिंघा
पिछे कसर नाहीं रहि जाइ कोई।

मार्च महीने के आरंभ में लखपत राय अपनी सेना का बड़ा दल लेकर सिक्खों को

Final

ढूंढने निकल पड़ा। सिक्ख लगभग १५ हज़ार की संख्या में काहनूंवान में छिपे हुए थे। लखपत राय ने घने जंगलों को कटवाना तथा जलाना शुरू कर दिया। सिक्ख मौका पाकर शाही सेना पर टूट पड़ते तथा अपने जौहर दिखाकर फिर जंगलों में जा छिपते। थोड़े ही समय में असला व खाद्य सामग्री की कमी आने लगी। बहुत-से सिक्ख भूख तथा ज़ख्मों की ताब न झेलते हुए शहीद होने लगे। आखिर सिक्खों ने फैसला किया कि जंगलों में छिपकर मरने से दुश्मन से जूझकर शहीद होना उचित है। सिक्ख जंगलों से बाहर निकल आए। सिक्खों के एक जत्थे ने जैकारों की गूंज में लखपत राय की फौज का ध्यान अपनी तरफ खींचना शुरू कर दिया और फौजों का मुकाबला करने लगे। दूसरी तरफ सिंघों ने बसौली की तरफ जाकर पहाड़ियों में पनाह लेने की योजना बनाई। सिक्खों ने रावी दरिया पार कर ज़िला कठूआ के गांव बसोली की तरफ जाना शुरू कर दिया। सिक्खों को आते देखकर पहाड़ी राजाओं की सेनाओं ने गोलियां दागनी अरंभ कर दी। ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

परबत दाएं ओरे बाएं दरिआउ घोर,
अग्गयो गिरीस जोर आए सैन भारीआ।
खाते तुरकानी दल आवतो तां पाइ बल,
नगर बसोली ढिग बनी सिंघै खवारीआ।

सिक्खों को चहूं तरफ से घेरा पड़ा होने तथा खाद्य सामग्री खत्म हो जाने के कारण मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था। दाईं तरफ रावी, पीछे फौज, सामने पहाड़ी से पत्थरों तथा गोलियों की वर्षा हो रही थी। न रस्द, न पानी, न बारूद, अति थके-मांदे और पहाड़ों की कठिन चढ़ाइयां। बहुत से सिक्ख शहीद हो चुके थे। सिंघों ने योजना बनाई कि जत्थे को तीन हिस्सों में बांट लिया जाए। एक जत्था पहाड़ों पर चढ़ने की कोशिश करे, दूसरा रावी पार करे और तीसरा जत्था स. सुक्खा सिंघ माड़ी कंबो की अगुवाही में दुश्मनों का डटकर मुकाबला करें।

रावी का बहाव बहुत तीक्ष्ण था। डल्लेवालिया दोनों भाइयों ने जब रावी में घोड़े ठेल दिए तो उनका कोई पता न चला। ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

गुर दिआल सिंघ हरि दिआल सिंघ डल्ले,
जत्थेदार लै अपार सिंघन संगारीआ।
बड़े सो दिरआउ मध पाणी बहे जोर बध,
डुबगे बहुत, थोरे लगे जाइ पारीआ।
उत तै निरास होइ जीवने की आस खोइ,
कीने मुख दिसा होइ सिंघन विचार है।

रावी को पार करना कठिन था, अत: रावी को पार करने का विचार छोड़कर इस जत्थे ने पहाड़ पार कर कुल्लू तथा मंडी की तरफ जाने की योजना बनाई। सिक्खों के एक जत्थे ने हिम्मत करके लखपत राय की फौज के घेरे को तोड़कर ब्यास तथा सतलुज को पार करके लक्खी जंगल की तरफ निकल जाने की योजना बनाई। इसी जद्दो-जहद में सिंघों की शाही सेवा से ज़ब्रदस्त मुठभेड़ हो गई।

सिक्खों के मुखियों ने जंगी नुक्ता-निगाह से दो जत्थे बनाए। इन में से ज्यादातर सिक्ख पैदल थे और उसको कांगड़ा, मंडी द्वारा होते हुए कीरतपुर साहिब पहुंचने के लिए कहा गया। दूसरा जत्था घुड़सवारों का था। इनको दुश्मन फौज पर हमला करके दरिया पार करने के लिए कहा गया। घुड़सवार जत्थे में स. कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ तथा स. सुक्खा सिंघ के जत्थे शाही सेना पर कृपाणों, बरछों से टूट पड़े। यह हमला इतना ज़ब्रदस्त था कि लखपत

राय तथा यहीआ ख़ान का एक-एक पुत्र मारा गया। स. सुक्खा सिंघ ने घोड़ा दौड़ा कर हाथी पर बैठे लखपत राय पर हमला करना चाहा तो एक गोली उसकी टांग में जा लगी। स. सुक्खा सिंघ ने अपनी दसतार में थोड़ा कपड़ा फाड़कर अपनी टांग पर बांध लिया। उसी समय स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया उसकी मदद हेतु आ गए और उसको साथ लेकर दुश्मन दल को चीरते हुए सुरक्षित जंगलों की तरफ चले गए। रात के समय स. सुक्खा सिंघ तथा स. जस्सा सिंघ ने सिक्खों में उत्साह भरने के लिए जोश भरपूर शब्दों से सम्बोधन किया। सिक्ख रात के समय स. लखपत राय के खेमे में चले गए और अच्छे घोड़े तथा हथियार छींनकर जंगलों में वापिस आ गए।

सिक्खों का जत्था ब्यास दरिया की तरफ चला गया। गर्मी का महीना, रेतला मैदान, ब्यास दरिया तक पहुंचना बहुत मुश्किल था। सिक्खों ने कपड़े उतारकर पांवों में बांध लिए तथा हिम्मत करके आगे बढ़ते गए; जहां दरिया में पानी कम था, सिक्ख वहां से बेड़ियों द्वारा दरिया पार करके श्री हरिगोबिंदपुर साहिब की तरफ चल दिए। कई दिनों के भूखे सिक्ख रोटी पकाने लगे तो अदीमा बेग ने हमला कर दिया। इसके साथ सिक्खों को यह सूचना भी मिल गयी कि दीवान लखपत राय भी पीछा करता आ रहा है। यहां पर इनकी झड़पें अदीना बेग की फौजों से हुईं, जिसको लाहौर दरबार की पुसतपनाही हासिल थी। यहां से सिक्ख मालवे की तरफ चले गए। यहां से लखपत राय वापिस चला गया तथा रास्ते में सिक्खों को ढूंढ-ढूंढकर शहीद करना आरंभ कर दिया। उसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब पावन स्वरूप अग्नि भेंट करके सिक्खों के धार्मिक स्थानों का भारी नुक्सान किया। खुशवंत राय सिक्खों पर टूटे इस मुसीबत के पहाड़ का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि :

"लखपत राय ने सिंघों के बचकर निकल जाने के सारे रास्ते बंद कर दिए। उसने गुफाओं तथा अन्य लुप्त स्थानों से सिंघों को पकड़कर शहीद कर दिया अथवा कैद कर लिया। उसने कैद किए सिंघों की केशों सहित खोपड़ियां उतरवाईं तथा अनेकों यातनाएं देकर शहीद किया। मिल्टरी के फौजी सिंघों को ढूंढने में इधर-उधर निकलते तथा जहां भी कोई सिंघ मिलता उसको खत्म कर दिया जाता। लखपत राय ने एक सिंघ के सिर की कीमत पांच रुपए रखी।"

इस जंग में सात हज़ार के लगभग सिक्ख शहीदी प्राप्त कर गए तथा तीन हज़ार के लगभग गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तार किए गए सिंघों को लाहौर के दिल्ली गेट की तरफ नख़ास चौक में सरेआम शहीद कर दिया गया। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया 'जौहर खालसा' में लिखते हैं कि:

कहिर वरतया सिंघां ते बड़ा भारा।
चल्ली कहिर दी इथे तलवार भाई।
बहुत सिंघ शहीदीआं पा गए,
कीती गिणती सत्र हज़ार भाई।
बाकी ज़ख़म तो बिनां ना कोई खाली,
जूझ गए पैदल असवार भाई।

इतने जुल्म करके भी वो सिक्खों के उत्साह को दबा नहीं था सका। सन् १७४७ ई. में वैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर में सिक्खों का एकट्ठ हुआ तथा मता पारित किया गया कि श्री अमृतसर में खुद को सुरक्षित रखने के लिए किले का निर्माण करवाया जाए। यह किला ही बाद में 'रामरौणी' के नाम से विख्यात हुआ था।

Final

भूला काहे फिरहि अजान

*-डॉ. गुरबचन सिंघ**

मनुष्य को सही मार्ग सच्चे गुरु के बताए ज्ञान से ही मिलता है। गुरमुति क्या है? गुरु का उपदेश अर्थात् वह शिक्षा, वह ज्ञान जो हमें गुरु ने दिया है। साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जिन्हें हमने मन, कर्म और वचन से गुरु माना हैं केवल एक 'ग्रंथ' नहीं हैं अपितु पूर्ण रूप पूजनीय 'गुरु' हैं। एक ऐसे सम्पूर्ण गुरु जो सृष्टि की रचना से लेकर मनुष्य के रूप में विकास तक, मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक तथा मृत्यु के पश्चात् आत्मा के परमात्मा में विलीन होने तक, पूर्ण यात्रा तक अपने उपदेश द्वारा सम्पूर्ण पथ को प्रकाशमान करते हैं। सभी वनस्पति, जीव-जंतु, पशू एवं मनुष्य में अकाल पुरख परमात्मा विद्यमान हैं। गुरबाणी में माना गया है कि :

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥
एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥ (पन्ना ५९६)

फिर चाहे ये अंडज हों जिनकी उत्पत्ति अंडे द्वारा होती है, जेरज अर्थात् पशु की श्रेणी के हों, उतभुज अर्थात् वृक्ष, वनस्पति, बेल आदि श्रेणी के हों अथवा सेतज अर्थात् मक्खी, मच्छर, कीटाणु आदि श्रेणी के हों। गुरबाणी कहती है कि हे परम पिता! हे अकाल पुरख! वे अंडज, जेरज, उतभुज, सेतज सभी प्रकार के जीव सब तेरे ही पैदा किए हुए हैं और मैंने तेरी एक विशेषता भी देखी है कि तू स्वयं इन सब जीवों में विद्यमान है।

मनुष्य के शरीर का विकास कैसे हुआ? जिस रूप में आज मनुष्य का शरीर है इस रूप में कैसे विकसित हुआ? इस विषय में गुरबाणी वैज्ञानिक पद्धति से ही मनुष्य के जीवन के विकास के बारे में कहती है। फर्क केवल इतना है कि वैज्ञानिक भौतिक रूप से संसार के विकास की बात करते हैं जबकि सतिगुरु पहले उस सर्वशक्तिमान अकाल पुरख, परमात्मा, वाहिगुरु रब्ब की बात करते हैं। फिर उस अकाल पुरख के हुक्म से, उस परमात्मा की आज्ञा से इस संसार की उत्पत्ति की बात कहते हैं। सतिगुरु जी ने बाणी को परमात्मा का आदेश कहा। इसे 'धुर की बाणी' अर्थात् प्रभु की स्वयं की बाणी कहा। यह बाणी कोई कविता या काव्य नहीं थी जिसे कवि ने अपने विवेक से सोच-विचार कर लिखा था। यह बाणी तो परम पिता परमेश्वर द्वारा दिया गया वो संदेश है जो उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा संसार को दिया है। जब भी श्री गुरु नानक देव जी को दिव्य संदेश आता तो वे भाई मरदाना जी को कहते, "भाई मरदाना! रबाब उठा, बाणी आई आ" और उस बाणी को राग में अलापते। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित बाणी की भाषा परिपूर्ण है। इसमें फारसी, पंजाबी, हिंदी व संस्कृत भाषा का ऐसा समावेश है जो साधारणतया एक बहुत पढ़ा-लिखा और इन सब भाषाओं का ज्ञाता ही कर सकता है।

गुरबाणी में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु

**३-ए, सादुल कॉलोनी, तुलसी सर्किल, बीकानेर (राज.)*

Final

तक हर समय के जीवन के लिए उचित मकार्गदर्शन है। आवश्यकता है उस राह पर चलने की, उस ज्ञान को अंतर्मन में बसाने की। धर्म-ग्रंथों, का अध्ययन करके हम ज्ञान तो प्राप्त कर सकते हैं परंतु जब तक हम उस ज्ञान का जीवन में उपयोग न करें वो हमारे लिए अर्थपूर्ण नहीं होता। हमने भोजन अर्जित तो कर लिया पर यदि हम उसे सामने रख कर बैठे रहें और खाएं ही नहीं तो क्या हमारी क्षुधा शांत हो सकती है? नहीं। हमने गहरे कुएं से पानी निकाल तो लिया अगर पिया ही नहीं तो क्या हमारी प्यास बुझ सकती है? कदापि नहीं। इसी प्रकार हमने धर्म-ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त कर तो लिया परंतु उसे बाहर ही रखा, अपने हृदय में नहीं उतारा, जीवन में नहीं ढाला तो वो सारा अमूल्य ज्ञान भी हमारे लिए सहायक सिद्ध नहीं हो सकता है, उससे हम जीवन की सच्चाई तक नहीं पहुंच सकते। गुरबाणी का पावन फरमान है :

अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥
नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥
(पन्ना ७८९)

अर्थात् केवल अंधे ज्ञान से सच का अनुभव नहीं हो सकता। यदि ध्यान वाह्यमुखी है, अंतर्मुखी नहीं है तो परमात्मा को नहीं पाया जा सकता अर्थात् कोरा ज्ञान के प्रकाश से अंदर तक नहीं पहुंच जाते। उस ज्ञान द्वारा हृदय तक पहुंच कर आत्मा रूपी परमात्मा के दर्शन नहीं कर लेते।

जीवन का प्रारंभ इस शरीर की रचना से शुरू होता है। यह शरीर भी तो उसी प्रभु का दिया हुआ है। जिन पांच तत्वों से यह शरीर बना है वो पांचों तत्व भी तो उस परमात्मा ने बनाए हैं। गुरबाणी में भी कहा गया है :

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥
(पन्ना १९)

अर्थात् यदि हम इस सृष्टि की रचना को देखते हैं तो बाणी हमें बताती है कि सत्यस्वरूप से यानि परमात्मा से पवन उत्पत्ति हुई, पवन से जल बना और जल से इस सृष्टि का निर्माण हुआ, जिसमें मनुष्य का शरीर बना और उस शरीर में मन तथा हर मन अथवा शरीर में ज्योति समाई रखी अर्थात् घट-घट में प्रभु का निवास है। जो मन गुरु के शबद के साथ रहता है वो हमेशा निर्मल रहता है, मैला नहीं हो सकता, उसकी पत्त यानी साख हमेशा बनी रहती है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि इस प्रथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से हुई है, इस संसार में जीवन सूर्य के कारण है। यदि सूर्य न हो तो ऊष्णता नहीं होगी, बर्फ ही बर्फ होगी, पानी भी नहीं होगा, रोशनी भी नहीं होगी, अंधकार ही अंधकार होगा। वैज्ञानिक कहते हैं कि सूरज का ही एक टुकड़ा टूट कर अलग हुआ जो धीरे-धीरे ठंडा हुआ और कालांतर में चट्टान के रूप में पृथ्वी बनी। पवन के ठंडा होने पर वह जल के रूप में परिवर्तित हो गई। इस जल में वनस्पति पैदा हुई। इस वनस्पति पर छोटे-छोटे जीव-जंतु पैदा हुए और धीरे-धीरे विकसित होते हुए पशु-पक्षियों और मानव का आकार लेने लगे। सभी ज्ञानी एवं अनुभवी-जन भी यही मानते हैं कि हमारा यह स्थूल शरीर पांच तत्व का बना हुआ है-- पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल और आकाश। इन पांच तत्वों के मिलने से मनुष्य पैदा होता है और अंत में इन्हीं पांच तत्वों में समा जाता

है। इसके भीतर की सूक्ष्म आत्मा, कभी नहीं मरती। हमारी सब इच्छाएं, कामनाएं, वासनाएं इस मन से जुड़ी रहती हैं। अगर हमारा मन जीवन में गुरमति की राह पर चलता है तो मनुष्य का जीवन सम्पूर्ण हो जाता है, उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है, वह इस संसार के आवागमन से मुक्त हो जाता है, नहीं तो उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है, बार बार मरना पड़ता है। माटी से ही हम पैदा होते हैं और अंत में माटी में ही मिल जाते हैं। भक्त कबीर जी फरमान करते हैं :

कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥
(पन्ना १३७४)

अर्थात् धूल यानि रेत इकट्ठी करके एक पुड़िया बांध दी, जिसे नाम दे दिया देह अर्थात् शरीर। यह तो चार दिन का तमाशा है, खेल है जो दिखाई दे रहा है वो तो चार दिन का है और अंत में तो इस शरीर को मिट्टी ही हो जाना है।

यह तो एक अकाट्य सत्य है कि आदमी पैदा मिट्टी से होता है और अंत में उसी मिट्टी में मिल जाता है। फिर क्यों भटकता है मनुष्य अपने जीवन में? शायद भोजन की खोज में।

मनुष्य को शरीर को बनाए रखने के लिए पहली आवश्यकता भोजन की है। पैदा होते ही मां का दूध उसका भोजन है। कुछ दिन का होने पर गाय, भैंस, बकरी का दूध उसका भोजन है। कुछ महीने का होने पर जानवर के दूध के साथ डिब्बे का दूध या कोई और पौष्टिक पदार्थ उसका भोजन बनते हैं। धीरे-धीरे वह रोटी-सब्ज़ी-दाल को अपना भोजन बना लेता है। इसी भोजन से उसके शरीर का विकास होता है, अस्थि, मांस, चर्बी व खून बनता है। इसी भोजन को कमाने के लिए बड़ा होने पर मनुष्य अपना सारा जीवन निकाल देता है। इसी के लिए मेहनत, मजदूरी करता है, दुकानदारी, व्यापार करता है, खेत खलिहान जोतता है, कारखाने लगाता है, उद्योग लगाता है, डॉक्टर, वकील, शिक्षक, इंजीनियर बनता है। कर्म अपना मनुष्य का धर्म है। श्री गुरु नानक देव जी ने तो संतों, पीरों, फकीरों को भी भीख मांगने से मना करके, कर्म करने के लिए कहा है :

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

अर्थात् अपने आप को गुरु या पीर कहलाने वाला अगर भीख मांगने जाता है तो उसके पांव कभी मत छूओ। जो अपने दोनों हाथों की कमाई करके खाता है और अपनी सामर्थ्य के अनुसार हाथ से दान करता है, दीन-दुखियों की सहायता करता है, वो ही उस परमात्मा का मार्ग जानता है।

गुरमति में अपने हाथों से कमा कर खाने को ही श्रेष्ठ माना गया है, अपने हक की कमाई को ही श्रेष्ठ माना है। श्री गुरु नानक देव जी ने का फरमान है :

हक पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
(पन्ना १४१)

अर्थात् हिंदू गाय को पवित्र मानता है, मुसलमान सूअर को पवित्र मानता है। गुरु जी का कथन है कि पराया हक खाना मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है और हिंदू के लिए गाय खाने के समान है। गुरु, पीर और पैगंबर भी केवल उसी की जिम्मेवारी लेते हैं जो

पराया हक नहीं खाता। हक-हलाल की कमाई को ही गुरु साहिब ने असली उपासना माना है। मुसलमानों की पूजा की पद्धति दिन में पांच बार नमाज पढ़ने की है। इस बाबत गुरु नानक साहिब जी ने कहा है :

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
(पन्ना १४१)

हक की कमाई से प्राप्त भोजन को गुरबाणी में खुदा की बंदगी, प्रभु की पूजा माना गया है।

अपने जीवन-काल में अपनी पहली उदासी के समय श्री गुरु नानक देव जी अपने एक सिक्ख भाई लालो के पास पहुंचे और उसी के यहां भोजन करते थे तथा वहीं कीर्तन व नाम-सिमरन करते थे। उसी समय सैदपुर के दीवान मलिक भागो ने ब्रह्मभोज का आयोजन किया। श्री गुरु नानक देव जी को भी बुलाया। मगर जब उसको पता चला कि श्री गुरु नानक देव जी भोजन ग्रहण करने नहीं आये तो उसने इसमें अपना अपमान समझा। उसने आदमी भेज कर गुरु जी को बुलाया और पूछा कि आप मेरे ब्रह्मभोज में क्यों नहीं आए? गुरु जी ने कहा कि आप अपना भोजन मंगवाइए अगर वह ग्रहण करने लायक होगा तो हम अवश्य ग्रहण कर लेंगे। मलिक भागो ने विभिन्न पदार्थों, हलवा, पूरी, खीर, सब्ज़ी से सजी थाली मंगवाई। उधर गुरु जी ने भाई लालो से उसकी रूखी-सूखी रोटी भी मंगवा ली। गुरु जी ने कहा, "ऐ मलिक भागो। तेरा ब्रह्मभोज दूसरों का हक्क मार कर, गरीबों का खून निचोड़ कर तैयार किया गया है और उधर भाई लालो ने अपनी सच्ची कमाई से भोजन तैयार किया है। तेरे भोजन में हमें गरीबों का निचोड़ा खून नज़र आ रहा है और भाई लालो की रोटी में अमृत। अब तू बता कि हम कौन-सा भोजन खाएं? तब मलिक भागो ने अपनी भूल स्वीकार की एवं भविष्य में हक्क-हलाल की कमाई करने का प्रण लिया। गुरमति कहती है कि किसी का हक्क मारना उसका खून पीने के बराबर है। हमारे कपड़ों में जरा-सा खून लग जाए तो हमें घृणा होने लगती है, फिर हम किसी का खून कैसे पी सकते हैं? श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥
अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥
(पन्ना १४०)

अर्थात् यदि हमारे वस्त्रों पर लहू लग जाता है तो वे अपवित्र हो जाते हैं, जामा पलीत हो जाता है। इस जामे को पहन कर नमाज नहीं पढ़ी जा सकती। जो मनुष्य दूसरों का लहू पीते हैं उनका मन कैसे शुद्ध हो सकता है? प्रभु का नाम साफ मन से उच्चारण करो। केवल मुंह से कुल्ला करने से, मुंह साफ करने से कुछ नहीं होगा। मन साफ करना बहुत ज़रूरी है। बाकी यह सब काम तो केवल दिखावा है। हम ज्यादातर झूठे काम करके झूठ पर अमल कर रहे हैं।

इस उपभोक्तावाद के भौतिक युग में हम रिश्वतखोरी, कालाबाज़ारी, मुनाफाखोरी का धंधा कर रहे हैं। जिस भोजन के लिए हम अपना सारा जीवन प्रभु को भूल कर उल्टे रास्ते चल के बर्बाद कर रहे हैं उस भोजन की व्यवस्था तो प्रभु ने हमारे जन्म से पहले ही कर रखी है। परमात्मा इस संसार के सब जीव-जंतुओं के

भोजन की व्यवस्था करता है, फिर मनुष्य क्यों चिंता करता है? श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

काहे रे मन चितवहि उदमु
जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥
सैल पथर महि जंत उपाए
ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥(पन्ना ४९५)

अर्थात् हे मन! तू चिंता क्यों करता है, जबकि परमात्मा स्वयं तेरे लिए फिक्र कर रहा है। उसने जो जीव चट्टानों और पत्थरों में पैदा किए हैं, उनके लिए भी रोज़ी-रोटी उनके सामने रख रखी है।

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ
सूके कासट हरिआ ॥ (पन्ना ४९५)

अर्थात् हे मेरे प्यारे! हे मेरे माधउ! जो साधसंगत करता है वो ही तैर कर पार उतरता है, वो गुरु की कृपा से ही परम पद की प्राप्ति कर सकता है। गुरु की कृपा हो जाए तो सूखी लकड़ी, सूखा पेड़ भी हरा हो जाता है।

जननि पिता लोक सुत बनिता
कोइ न किस की धरिआ ॥
सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु
काहे मन भउ करिआ ॥ (पन्ना ४९५)

अर्थात् माता, पिता, लोक, पुत्र एवं स्त्री कोई भी किसी का सहारा नहीं हैं। प्रत्येक इन्सान को, प्रत्येक जीव को मालिक आहार पहुंचाता है।

ऊडै ऊडि आवै सै कोसा
तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥
तिन कवनु खलावै कवनु चुगावै
मन महि सिमरनु करिआ ॥ (पन्ना ४९५)

कूंज (पक्षी) उड़ती-उड़ती सैकड़ों कोस दूर से आ जाती है। उसने अपने बच्चों को पीछे छोड़ रखा है, जहां से वह उड़ कर आई है। उन्हें कौन खिलाता है, कौन दाना चुगाता है, क्या तूने मन में इसका कभी ख़्याल किया है? वो परमात्मा ही उनकी व्यवस्थ करता है। कूंज तो केवल मन में उनकी याद रखती है। इसलिए मनुष्य को भोजन के लिए जल्दबाज़ी में आकर पाप-कर्म नहीं करना चाहिए, दूसरे का हक्क नहीं छीनना चाहिए, लूट-खसूट करके पाप का भागी नहीं बनना चाहिए। भक्त नामदेव जी ने इस संदर्भ में बहुत सुंदर फरमान किया है :

सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥
ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ (पन्ना ४८५)

जो मनुष्य लूटमार के भोजन पर रहता है, जो शेर-चीते की तरह दूसरों को मार कर खाता है, उसे मनुष्य नहीं बल्कि ठगों का देवता कहते हैं।

गुरमति कहती है कि हमें यह मनुष्य-देह मिली है, अब प्रभु से मिलने की व्यवस्था करें। जो जीवन हम जी रहे हैं, क्या यही ज़िंदगी है? नहीं। हम बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। हमने भौतिक साधनों की व्यवस्था कर लेने को ही ज़िंदगी समझ लिया है। जीने के लिए भोजन, मकान, परिवार सब की आवश्यकता है और इसके लिए हम कितने पाप-कर्म करते हैं, परंतु यह ज़िंदगी नहीं है, केवल जीने के साधन मात्र हैं। ज़िंदगी तो अब शुरू होगी। जहां से आये हैं वहां जाना है। इसके लिए गुरमति ने राह दिखाई है।

Final

गुरमुख

–स. नरिंदर *सिंघ सोच*

गतांक से आगे. . .

गुरमुख वैर नहीं डालते, दूरियां नहीं बढ़ाते। अंतर डालने गुरमुखों का काम नहीं है। गुरमुखों का संधियों के साथ मन मानता है। वे समझौतों पर बल देते हैं। वे गांठते हैं, तोड़ते नहीं हैं। वे जोड़ते हैं, फोड़ते नहीं है। वे करीब लाते हैं, दूर नहीं करते। वे मित्रता बढ़ाते और वैर कम करते हैं।

गुरमुखों को सारे संसार में से रब्ब की मंगलमयी आवाज़ें सुनती हैं। मीन को किसी ने बोलते नहीं सुना परंतु गुरमुखों को उसका जाप सुन गया है। मृग और पक्षी सब प्रभु का सिमरन करते हैं, हरहट (हरट) भी 'तू तू' का जाप कर रहा है।

गुरमुखों के बिना सारा संसार मैला है। गुरमुखों के बिना रात मैली है, दिन मैले हैं, महीने उज्ज्वल नहीं; सागरों के सीने में से निकले मोती मैले हैं, पत्थरों के सीने फाड़ कर निकाले हुए हीरे मैले हैं, हवायें मैली हैं, पानी मैले हैं, अग्नि भी मैली है। केवल प्रभु को स्मरण करने वाले गुरमुख ही निर्मल हैं।

गुरमुख प्रवृत्ति और निवृत्ति को जानते हैं कि किसमें लगना है और किस वस्तु को त्यागना है। गुरमुख अधिक बल आंत्रिक सूक्ष्म शक्तियों पर लगा कर उनको उजागर करते हैं। बाहरी स्वाद, मिट जाने वाले प्यार गुरमुख त्याग देते हैं। वे नेहुं निवेले के धारक बनते हैं।

गुरमुख सच बोते हैं, सच गोड़ते हैं और रूड़ी (घूरा) डालते हैं, सच की फसल का ढेर लगा कर धनाढ्य बनते हैं। वे सच की खेती करते हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी ने एक ही शबद में गुरमुखों के काम का विवरण खोल कर दिया है। पहले चौबीस प्रश्न किए हैं :

(१) मुक्त कौन है? (२) युक्तिवान कौन है? (३) ज्ञानवान कौन है? (४) व्याख्याकार कौन है? (५) गृहस्थी कौन है? (६) उदासी कौन है? (७) कीमतें कौन पा सकता है? (८) जीव बंधनों में किस प्रकार बंधता है? (९) जीव का छुटकारा कैसे हो सकता है? (१०) जन्म-मरण कैसे दूर हो सकता है? (११) कर्मी कौन है? (१२) निहकर्मी कौन है? (१३) कहने वाला कौन है? (१४) कहलवाने वाला कौन है? (१४) सुखी कौन है? (१६) दुखी कौन है? (१७) सम्मुख कौन है? (१८) बेमुख कौन है? (१९) मिला कैसे जाता है? (२०) विछोड़ा कैसे पड़ता है? (२१) कौन-सा मंत्र है, जो योनियों से रक्षा करता है? (२२) वह कौन-सा उपदेश है, जिससे दुख-सुख समान हो जाते हैं? (२३) किस गति या रीति से सिमरन किया जाता है? (२४) कीर्तन किस तरह करना चाहिए?

१. गुरमुख ही मुक्त हैं, क्योंकि उन्होंने हउमै के सहारे काम करने बंद कर दिए हैं वे कर्म करते हैं परंतु निष्काम, अपने गुरु को भेट चढ़ाते हैं। गुरमुख संसार में आते हैं, परंतु निशंक होकर जाते हैं, तो निशंक होकर वे अपने कर्मों के धकेले हुए संसार में नहीं आते और न ही कर्मों के मारे संसार में से मरते हैं। वे सागर की लहर की भांति अलग हुए अनुभव होते हैं, परंतु उस समय भी वे सागर का रूप होते हैं।

२. गुरमुख ही युक्तिवान हैं। युक्तिवान होने के कारण उनका रोना भी भक्ति है, उनका हंसना भी भक्ति है, उनका उठना भक्ति है तथा

Final

उनका बैठना भी भक्ति है, उनकी घोड़े पर सवारी सभी भक्ति है, उनका महलों में रहना भी भक्ति है, उनका लड़ना भक्ति है, उनका वैरी को मारना भी भक्ति है। जो कुछ भी वे करते हैं वह सब भक्ति है। उनका सोना समाधि है। उनका जागना सिमरन है।

३. केवल गुरमुख ही ज्ञानवान हैं। ज्ञान पढ़ने से नहीं होता। जैसे-जैसे मनुष्य पढ़ता है, वह तो उलटा अधिक दुखी होता हुआ बंधनों में बंधता जाता है। हम दर्शन जानने का प्रयास करते हैं। हम रसायण की खोज करते हैं, इतिहास की खोज करते है, ब्रह्मांड के बारे में ज्ञात करते हैं परंतु सबसे कम इस बात पर बल लगाते हैं कि सारा ज्ञान किसको होता है, कौन है जो हमारे सुखोपति के आनंद को बयान करता है? रूपों से रूपों को मानने वाले (अथवा इनका आनंद लेने वाले) के बारे में अधिक ज्ञात करना चाहिए और गुरमुख इसी ओर सारा ध्यान देते हैं, इसलिए गुरमुख ही ज्ञान हैं।

४. केवल गुरमुख ही व्याख्याकार हैं। गुरमुख 'गूंगे की मिठाई' नहीं, वे वर्णन कर सकते हैं। वे अगोचर को जानते और जनाते हैं, अगम को पकड़ते और पकड़वाते, अनडिठ को देखते तथा दिखाते हैं। वे बिना आंखों के देखते और बिना कानों के सुनते हैं। वे बिना पैरों के चलते हैं और बिना हाथों के बड़े-बड़े काम रकते हैं। वे बिना जिह्वा के बोलते हैं। वे पहले जीवित भाव से मरते हैं, उसमें लीन हो जाते हैं, फिर मरजीवड़े बन कर गहरे सागरों में गोते लगाकर मोती ढूंढ लाते हैं।

५. गुरमुख ही गृहस्थी बन सकते हैं। वे किसी को ठिठुरते देख कर अपने घोंसले का ईंधन जला सकते हैं और किसी भूखे को देख कर अपने घोंसले की अग्नि पर स्वयं भुज सकते हैं। वे विवाह के समय भाई भिखारी की तरह सस्कार का प्रबंध चुपचाप कर सकते हैं। वे दुखों की, भूखों की सदीवी मार को भी दाते (प्रभु) की दात समझ कर चूम सकते हैं।

६. उदासी भी गुरमुख ही हो सकते हैं। वे वन और घर को एक जैसा समझ सकते हैं। एकांती एकांत में बैठने वाला नहीं, बल्कि जिसके हृदय में टिकाव है, वह एकांती है। गृहस्थी कमल भी है परंतु वह अधिक उदासी है। उसका सारा ध्यान सूर्य की तरफ है। पानी की बूंद को वह झट तिलका देता है (अर्थात् एक ओर कर देता है)। जो बच्चों को अमानत समझ कर वापस कर देता है वही असल उदासी, त्यागी और सन्यासी है। जो मोह के कीचड़ में गले-गले तक नहीं धंसते वही उदासी हैं।

७. कीमतें भी गुरदास पा (आंक) सकते हैं। एक आटे, दाने और भूसे की कीमतें होती हैं परंतु कुछ सूक्ष्म सामाजिक और आध्यात्मिक कीमतें होती हैं तथा गुरमुख सूक्ष्म कीमतें पाते हैं। वे अपनी खिचड़ी के पीछे आंधी बंद नहीं करते। वे वक्ती लाभ नहीं बल्कि सदीवी लाभ के लिए सच्चा सौदा करते हैं। वह मां की कोख सफली करने के लिए रिहाई का रुक्का (कागज़) लाने वाली मां को कह देता है, "मैं तो तुझे जानता नहीं! तू तो मेरी मां ही नहीं! यदि तू मेरी मां होती तो मुझे बेदीन (धर्महीन) करने वाली कार न करती!"

८. जीव को बांधने वाली 'हउं' और 'मैं' है। सभी कर्मों का केंद्र 'हउं' या 'मैं' है। हउमै असाध्य रोग है। इसी के सहारे सारा आदान-प्रदान, दुख-सुख, जन्म लेना एवं मरण है, हंसना-रोना है, पुण्य-पाप है, मूर्ख और समझदार (बुद्धिमान) है। जहां हउमै है वहां प्रभु नहीं जहां प्रभु है वहां हउमै नहीं। हउमै विकार है। हउमै वाले ऊंचे टीलों पर वर्षा का पानी नहीं रहता। माया का परित्याग सुगम है परंतु सूक्ष्म अहंकार छोड़ना कठिन है।

९. गुरमुख हउमै को दूर करके छुटकारा प्राप्त कर जाते हैं। जब जीव अहंकार करता है तो योनियों में भटकता है, परंतु जब यह स्वयं को तुच्छ जानता है, सभी ओर प्रभु नज़र में पड़ता है। जब एक दूसरे को बुरा और स्वयं को

अच्छा समझता है तो जानो इसके चारों ओर फाहियां हैं, परंतु जब यह 'मेरा-तेरा' दूर कर देता है, फिर शेष कोई बुरी चीज़ इसके करीब नहीं फटक सकती।

१०. गुरमुखों का आना-जाना एक खेल है, जैसे स्टेज पर एक नट भेख बना कर आता है, अपना पार्ट अदा करता है और चला जाता है, जैसे मनुष्य सपने की एक दुनिया अपने आप में से पैदा कर लेता है, उसको स्वयं ही आनंद लेता है और फिर खत्म कर देता है, गुरमुखों का आना-जाना इसी तरह का है।

११. गुरमुख कर्मयोगी हैं। वे दिन-रात एक करके काम करते हैं। वे एक आयु में कई आयुओं का काम कर जाते हैं। उनकी एक हरकत भी निष्फल नहीं जाती। वे अपनी सारी शक्ति किसी आदर्श के लिए व्यय करते हैं। यह संसार कर्मभूमि है और गुरमुख कर्मों के खुले खेत बोते और काटते हैं।

१२. गुरमुख ही निहकर्मी हैं। वे कर्म करते हुए भी निहकर्मी हैं, क्योंकि वे कर्म 'मैं' के सहारे नहीं करते। कर्म करके वे कर्मों के फलों को भिखारियों की तरह नहीं मांगते। गुरमुखों के हाथ होते हैं, परंतु कर्म करने की शक्ति प्रभु की होती है। वह गुरमुखों की आंखों की खिड़कियों में बैठकर देखता है, गुरमुखों के कानों में बैठकर सुनता और गुरमुखों की जिह्वा पर बैठकर चखता है। इसलिए गुरमुख तो एक साधन ही रह जाते हैं, करने करवाने वाला वह (प्रभु) स्वयं होता है।

१३. गुरमुख ही कहने वाला होता है। उसने वह कहना है जो उसने स्वयं देखा है, स्वयं अनुभव किया है, स्वयं ढूंढा है, स्वयं कशीदा है और जिसकी स्वयं छानबीन की है। करनी के बिना कहना नीचता वाला है। सारा जग ज्ञानी है परंतु आचारी कोई नहीं। सारा संसार पंडित है परंतु विचार वाला कोई नहीं। चीनी कहने से चीनी का स्वाद नहीं आता, चांद कहने से अंधकार दूर नहीं होता और सूर्य कहने से शीत दूर नहीं होती। गुरमुखों की रहनी ही कहनी है, इसलिए उनका प्रभाव बहुत पड़ता है। जग कौआ है, इसका ज्ञान केवल चोंच ज्ञान है। कहने के लिए आलिम बाअमल चाहिए।

१४. श्रोते भी गुरमुख होते हैं। वे शबद के आशिक होते हैं। वे ज्योति के पतंगे होते हैं। वे सम्मुख होकर तीरों को सीने में खाते हैं। शबद की चोट तीर की नोक से अधिक तीखी और पीड़ा वाली होती है। उनके सुनने के लिए कान होते हैं, उपदेश की स्वांति बूंदों को लेकर मोतियों का रूप दे देते हैं। वे चेतन्य होकर मृगों की भांति सुनते हैं।

१५. गुरमुख ही सुखी है। उनके पास सदीवी सुख होता है। वे सब में बरतते हैं, आनंद में घूमते हैं और प्रकाश में उड़ते हैं। उनका सुख देश और काल से परे होता है, इसलिए वह कायम रहता है। वे बंद-बंद कटवाते, खोपरियां उतरवाते और अपने आप को आरों के साथ कटवाते हुए भी भजनानंद और परमानंद में लीन होते हैं।

१६. मनमुख दुखी होते हैं। उनका मुख अंधेरे की ओर होता है। वे नीचे को कीचड़ की ओर जाते है। वे वक्ती (अस्थिर) चीज़ों को महान समझते हैं, क्षणिक सुखों के लिए मारे-मारे घूमते-फिरते हैं।

१७. गुरमुख ही सम्मुख हैं। बंदूक के निशाने परखने के लिए वे अपना सीना आगे कर देते हैं। महलों में बसने की जगह वे चूने के साथ चिनी ईंटों में जड़े जाना अधिक पसंद करते हैं वे बीन की भांति सीधे निशाने पर पहुंचते हैं।

१८. मनमुख बेमुखिये हैं। वे परीक्षा के समय भाग जाते हैं, सम्मुख होकर शहीद होने की जगह दुर्ग की दीवार से गिर कर टांगे तुड़वा लेते हैं। मनमुख स्त्रियां पति से बिछुड़कर वियोग भाव का अनुभव नहीं करतीं। मनमुख हाथों में खंडा लेकर भी भागने के रास्ते ढूंढने लग पड़ते हैं।

१९. गुरमुख बन कर मिला जाता है, अपना आप मिटा कर अथवा अस्तित्व समाप्त करके तथा उसमें लीन होकर।

२०. मनमुख बिछुड़े हैं, क्योंकि उन्होंने प्रभु से दूर जाने वाले रास्तों को चुन लिया है।

२१. शबद के अर्थ पर चलने से 'गुरमुख' का मन दौड़ने से रुक जाता है। गुरमुख गुरु की ओर मुख रखने से गुरु में समा जाते हैं। अपने आप को ढाल कर उस प्रकार के बन जाते हैं। वे अपनी मर्ज़ी गुरु की मर्ज़ी के अधीन कर देते हैं।

२२. गुरमुखों का चलन ही एक उपदेश है। जैसे वे दुख-सुख को, लाभ-हानि को, सोने और मिट्टी को एक जैसी अनुभव करते हैं, उसी प्रकार श्रोते भी उनके पद-चिन्हों पर चलते हैं। जो कुछ कहने वाले के पास है, वही कुछ श्रोते को मिलना है।

२३. गुरमुखों के सिमरन की रीति है श्वास-श्वास नाम जपना। उनके रोम-रोम में से सिमरन की आवाज़ निकलती है। कूंज की भांति भजन, कच्छू की भांति ध्यान और हंस की भांति विवेक यह है गुरमुखों का ज्ञान, ध्यान और सिमरन।

२४. गुरमुख बनकर कीर्तन करना चाहिए। कीर्तनिया अपने गुरु को ध्यान में रखता है। वह महसूस करता है कि उसका गुरु चौकड़ा मार कर उसके समाने बैठा कीर्तन सुन रहा है। कीर्तनिया बाणी के भावों में पिघल कर बाणी का रूप हो जाता है। उसकी आवाज़ स्वर के साथ-साथ जज़्बे का रूप हो जाती है। इस एकाग्रता तथा इन भावों का ही संगत पर प्रभाव पड़ता है।

यह धरती धर्मसाल है और गुरमुखों के लिए यह बनाई है, परंतु चोर कब्ज़ा करके बैठ गए हैं। गुरमुख कभी बूढ़े नहीं होते। उन पर उत्साह में यौवन का जोश रहता है। गुरमुखों के किए काम ही प्रभु का स्वीकृत होते हैं। गुरमुखों पर कभी अज्ञान का प्रभाव नहीं होता। पावन शब्दों में से कुछ पंक्तियां जिनके आधार पर यह आलेख लिखा है :

१. गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ (पन्ना २)

२. गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥
जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ (पन्ना १४२२)

३. गुरमुखि आवै जाइ निसंगु ॥ (पन्ना १३२)

४. गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ (पन्ना ३०९)

५. गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ (पन्ना १४२२)

६. गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥ (पन्ना २२८)

७. जागत सोवत बहु प्रकार गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ (पन्ना ११९४)

८. सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ (पन्ना ११९३)

९. गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ (पन्ना ४२८)

१०. गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ (पन्ना ९४१)

११. गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ (पन्ना १२८५)

१२. गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥
गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ (पन्ना ९४२)

१३. इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥
. . .कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ (पन्ना ३०९)

१४. कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥
कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥
कउणु सि गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥१॥
किनि बिधि बाधा कीनि बिधि छूटा ॥
किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥
कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥२॥
कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥
कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥
किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥३॥ (पन्ना १३१)

Final

नशों के सेवन के घातक प्रभाव

-स. सुरजीत सिंघ*

यह कटु सत्य है कि युद्ध, अकाल, महामारी से मानव जाति को इतना अधिक नुकसान नहीं पहुंचा जितना कि नशे से। यह कहना सर्वथा तर्कसंगत होगा कि नशे का अधिक सेवन ही अकाल मृत्यु को आमंत्रण देने के समान है। नशे के सेवन से होने वाले कुप्रभावों को देखकर अब सर्वत्र कहा जाने लगा है-- "तंबाकू पर लगनी चाहिए, पूरी तरह पाबंदी। नशाखोर तो अंधे हैं, सरकारें भी हुई हैं अंधी।" नशा एक ऐसी बुरी आदत है जो कुछ समय पश्चात न चाहते हुए भी मनुष्य को अपनी पकड़ में जकड़ लेता है। अक्सर देखने में आया है कि क्षणिक आनंद पाने के लिए, दिखावे अथवा कुसंगत के परिणामस्वरूप प्रारंभ हुई नशे की लत से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है; कभी-कभी तो यह मृत्यु का कारण तक बन जाता है।

'पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥
हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥"

यह पंक्तियां किसी पुस्तक, पत्रिका अथवा अखबार से नहीं ली गई अपितु वास्तव में पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ७२६ से उद्धृत हैं। तंबाकू के सेवन से समाज, संस्कृति, मानवता पर पड़ने वाले भयंकर कुप्रभावों से सुचेत करने हेतु लगभग ५०० वर्ष पूर्व ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह आशय दर्ज हो गया था, जो मेडिकल साइंस आज विभिन्न परीक्षणों के उपरांत समस्त विश्व को तंबाकू से होने वाली महामारियों का हवाला देकर सावधान रहने को कह रहा है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के अनुसार यह सत्य है कि विश्व के कई देशों में तंबाकू-सेवन पर पूर्ण अथवा आंशिक रूप से पाबंदी लगाई जा चुकी है, जो सुखद प्रारूप है। 'विश्व धूम्रपान निषेध दिवस' ३१ मई, २००९ से भारत सरकार ने बीड़ी-सिगरेट के हर पैकेट के ऊपर चेतावनी-स्वरूप तंबाकू से होने वाली घातक बीमारियों के चित्र रेखांकित करना अनिवार्य कर दिया है ताकि इनका सेवन करने से पहले पैकेट को हाथ में लेने पर व्यक्ति सोचने पर मजबूर हो जाये।

चाहे छोटे से छोटा गांव हो अथवा बड़े से बड़ा शहर किंतु कोई भी स्थान नशे की महामारी से बचा हुआ नहीं है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की रिपोर्टों के अनुसार विश्व के किसी भी भाग में प्रति ८ सेकंड में एक व्यक्ति की मृत्यु तंबाकू के किसी भी रूप में सेवन से हो रही है एवं प्रति वर्ष विश्व में तंबाकू जनित रोगों के कारण कम से कम ४० लाख व्यक्ति अकाल मृत्यु के मुंह में धकेले जा रहे हैं जो अपने आप में रिकार्ड है। अफ़सोस कि तंबाकू-जनित रोगों के प्रसार से मरने वालों की संख्या कम होने के स्थान पर प्रति वर्ष निरंतर बढ़ती ही जा रही है। तंबाकू, गुटखा, जर्दा, पान, बीड़ी-सिगरेट, अफीम, चरस, गांजा इत्यादि नशे के सेवन से मुंह में या गले में घातक रोग कैंसर हो जाता है, दांत पायरियाग्रस्त हो जाते हैं एवं जबड़ों की हड्डी तेजी से गलने-सड़ने लगती

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७; मो ९४१३६-५१९१७

Final

है। तंबाकू चबाने से दांत कमज़ोर होकर घिसने के साथ-साथ टूटने का शिकार भी हो जाते हैं, मुंह बंद होने के कगार पर पहुंच जाता है, जिससे भोजन करने-चबाने में कठिनाई का आभास होने लगता है, क्योंकि तब जबड़ों का खुलना ही मुश्किल हो जाता है।

तंबाकू हमारे स्वास्थ्य के लिए जानलेवा धीमे ज़हर का कार्य करते हुए दिल दहला देने वाले रोगों को अनायास ही आमंत्रण दे डालता है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन अस्सी हज़ार से एक लाख तक व्यक्ति निकोटीन ज़हर के आदी होते जा रहे हैं जो आश्चर्यजनक एवं चिंतनीय है। जरा सोचो, सार्वजनिक स्थानों पर वाहन चालकों से लेकर यात्रियों तक, कार्यालयों में अधिकारी से लेकर चपरासी तक, विद्यालयों में अध्यापक से लेकर विद्यार्थियों तक, दुकानों में मालिक से लेकर कर्मचारी तक एवं घर में पिता से लेकर पुत्र तक अर्थात् हर स्तर पर, हर पल, हर क्षण तंबाकू का किसी न किसी रूप में सेवन हो रहा है, जो किसी अकाल विभीषिका से कम नहीं है। नशा तो मनुष्य के स्वास्थ्य, धन, परिवार पर एक साथ डाका डालते हुए तब तक पीछा नहीं छोड़ता जब तक कि मनुष्य रोगग्रस्त होकर मृत्यु तक नहीं पहुंच जाता अर्थात् हर तरफ नुकसान ही नुकसान।

बीड़ी-सिगरेट अथवा सिगार के धुएं में कई प्रकार के घातक रासायनिक तत्व, गैसें होती हैं, जिनमें निकोटीन मुख्य है। निकोटीन सफेद रंग का अत्यंत ज़हरीला तत्व होता है। कहा जाता है कि यदि निकोटीन की शुद्ध एक बूंद भी किसी मनुष्य के शरीर में इंजेक्शन द्वारा प्रवेश करा दी जाए तो तत्काल मृत्यु भी हो सकती है। जो लोग प्रतिदिन बहुत अधिक संख्या में बीड़ी-सिगरेट पीने के आदी हो जाते हैं, धूम्रपान से निकली ज़हरीली निकोटीन स्वत: उनके शरीर में समाहित हो जाती है, जो भयंकर रोगों का मुख्य कारण है। धूम्रपान करने वाले की तत्काल मृत्यु नहीं होती, क्योंकि एक बार एक ही समय निकोटीन की जितनी मात्रा वह ग्रहण कर रहा होता है, घातक सीमा से बहुत कम होती है, किंतु स्वास्थ्य पर कुप्रभाव निरंतर बढ़ता चला जाता है। सिगरेट का धुआं मनुष्य की श्वास-प्रणाली को अवरुद्ध कर देता है। निकोटीन ज़हर के अतिरिक्त धूम्रपान से छोड़े गये धुएं में विषैली गैसें एवं हानिकारक तत्व, जैसे कार्बन मोनो-ऑक्साइड, हाइड्रोजन साईनाइड, पाईरीडन, अमोनिया, एल्डेहाइड आदि विद्यमान होते हैं। ज़हरीला धुआं मुंह, गले से होते हुए शरीर की वायु नलियों द्वारा फेफड़ों में प्रवेश कर विष जमा करने का कार्य करता है, जिससे फेफड़ों का कैंसर होने की संभावना अधिक हो जाती है। धूम्रपान करने वालों की संतान जन्म लेने से पूर्व ही कई रोगों से ग्रसित हो जाती है। तंबाकू से होने वाली घातक बीमारियों के भीषण परिणाम निम्नांकित हैं :

१. तंबाकू, पान, जर्दा, गुटखा चबाने से मुंह में, जुबान, भोजन-नली एवं वायु-नली में कैंसर होने की संभावना सदैव बनी रहती है।

२. धूम्रपान करने से भयानक रोग काली खांसी आ घेरती है। ज़हरीले धुएं से फेफड़ों में जीवन-रक्षक वायु के प्रभाव में अवरोध उत्पन्न हो जाता है जिससे फेफड़ों की वायु-नलियां क्षतिग्रस्त होने लग जाती हैं। कहा जाता है कि यह जानलेवा बीमारी मनुष्य का जीवन भर साथ नहीं छोड़ती।

३. धूम्रपान करने से सिरदर्द होना, हाथ-पैर टूटना, नींद न आना, चिड़चिड़ापन रहना

स्वाभाविक प्रक्रिया है। धूम्रपान की अधिकता से आंखों की ज्योति एवं कानों से सुनने की शक्ति क्षीण होती चली जाती है।

४. धूम्रपान से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। तंबाकू-विष 'निकोटीन', जो धुएं में विद्यमान रहता है, हृदय की मांसपेशियों को, रक्त पहुंचाने वाली नलिकाओं को कठोर एवं मोटा कर देता है। परिणामस्वरूप रक्त-वाहिनी नलिकाओं का लचीलापन एवं नम्रता समाप्त होती चली जाती है। रक्त-संचार में इस प्रकार बाधा पड़ने से ब्लड रूप से प्रेशर बढ़ जाने के अतिरिक्त हृदय को मिलने वाली ऑक्सीजन की आपूर्ति कम होने लगती है, जिससे हृदय भारी हो जाता है। रोग अधिक बढ़ने से हृदय सुचारू रूप से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है जो हृदयाघात से अकाल मृत्यु का कारण बन सकता है।

५. वैज्ञानिक परीक्षणों के प्राप्त आंकड़ों से प्रमाणित हो चुका है कि धूम्रपान से मनुष्य की आयु कम होने लगती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि मात्र एक सिगरेट के सेवन से ही आयु के ६ मिनट तक कम हो जाते हैं अर्थात् 'जितना अधिक तंबाकू-सेवन, उतनी कम जीवन आयु।'

६. तंबाकू, पान, गुटखा खाने से भूख कम हो जाती है, मुंह का स्वाद खराब होने लगता है, सुनने की शक्ति कमज़ोर होने से लेकर मुंह से दुर्गंध आने लगती है।

यह प्रमाणित सत्य है कि तंबाकू-सेवन किसी भी प्रकार से स्टेट्स सिंबल नहीं है और आगे भी नहीं हो सकता, अपितु शरीर को अंदर ही अंदर कमजोर, खोखला एवं छलनी करने का साधन-मात्र अवश्य है। हमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष धूम्रपान से सदैव बचते रहना चाहिए। घर, परिवार, सिनेमा हॉल, सभा-स्थल, भीड़भाड़ वाले क्षेत्र, बस-रेल के डिब्बे इत्यादि में यदि कोई धूम्रपान करता है तो उसके आस-पास बैठे व्यक्ति स्वाभाविक ही 'पैसिव स्मोकिंग' के माध्यम से कई जानलेवा बीमारियों का शिकार हो जाते हैं जिसमें हृदयाघात ३३ प्रतिशत, ब्लक कैंसर ४० प्रतिशत, फेफड़ों की बीमारी ५० प्रतिशत, बाल-मृत्यु दर ३३ प्रतिशत एवं नव शिशु के कमज़ोर पैदा होने की २५ प्रतिशत तक की संभावना बनी रहती है।

भारत में संभवतया जन्मा हुक्का जब अमेरिका, यूरोप एवं अरबियन देशों से घूमकर भारत आया तो आज इसे साहूकारी अंदाज़ में बैठकर गुड़गुड़ाते कई युवाओं एवं वृद्धों को सामूहिक रूप से देखा जा सकता है। ऐसा अनुमान है कि हुक्के का जन्म-स्थल कम से कम पांच सौ वर्ष पूर्व भारत, ईरान, मिडिल ईस्ट इत्यादि देश रहे हैं। भ्रमवश सिगरेट की तुलना में हुक्के को कम हानिकारक एवं निरापद मान लिया जाता है, किंतु वास्तविकता तो इसके बिलकुल विपरीत है। एक घंटे तक हुक्का गुड़गुड़ाने से लगभग ५० सिगरेट के बराबर का ज़हरीला धुआं स्वत: ही फेफडों में पहुंच जाता है। शहरों-नगरों में द्रुत गति से हुक्का बार एवं रेस्तरां खुलते जा रहे हैं, जहां जाने वालों में बड़ी संख्या में नशे की लत पाले किशोर, युवक एवं वृद्ध शामिल हैं। आश्चर्य है कि कहीं-कहीं तो महिलाएं भी इसका शिकार हैं।

अकेले अमेरिका में ही छोटे-बड़े मिलाकर लगभग ५०० हुक्का कैफे हैं। इसी प्रकार से ब्रिटेन, रूस, फ्रांस, मिडिल ईस्ट, अरबियन कन्ट्रीज़-- पाकिस्तान, बंगला देश इत्यादि अनेक देशों में बड़ी संख्या में हुक्का बार संचालित हैं और इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है। हुक्के में चूंकि पानी होता है, इसलिए अधिक शक्ति से इसे खींचना पड़ता है। आश्चर्य है कि उतनी ही

Final

तेज़ी से ज़हरीला धुआं भी शरीर के अंदर प्रवेश करता चला जाता है। हुक्के में प्रयुक्त होने वाले तंबाकू में कहीं-कहीं हानिकारक लोमहर्षक तत्वों का मिश्रण भी मिलाया जा रहा है।

हुक्का गुड़गुड़ाने में जितनी अधिक उर्जा और समय लगता है उतनी ही तेज़ी से पनपने लगती हैं जानलेवा बीमारियां एवं भयंकर रोग। सिगरेट की तुलना में हुक्का-स्मोक में आर्सेनिक, लेड, निकेल जैसी हानिकारक धातुओं का उच्च स्तर रहता है।

हुक्का-सेवन से मुख, फेफड़े, पेट एवं शरीर के अन्य अंग प्रभावित होते हैं। फलस्वरूप कैंसर, हृदय-रोग, फेफडों का गलना, मसूड़ों-दांतों की बीमारियों का खतरा सदैव मंडराता है है। हुक्के में एक ही माउथपीस रहता है जिसका सामूहिक रूप से एकमात्र इस्तेमाल होते रहने से विभिन प्रकार के संक्रामक रोग भी हो जाते हैं। हुक्के के धुएं में कार्बन मोनोऑक्साइड़, हाइड्रोजन साइनाइड, पाईरीडन, अमोनिया, एल्डेहाइड इत्यादि विषैले तत्व विद्यमान रहते हैं।

नशे से होने वाले कुप्रभाव पर गंभीरता से विचार कर निर्णय लें (जो कि सर्वथा हमारे हाथ में है) कि हमें स्वास्थ्य चाहिए या बीमारी? सुख चाहिए अथवा दुख? जीवन चाहिए अथवा मृत्यु? यदि हम सब धूम्रपान विरोधी हैं तो आओ, हो जाएं तैयार और आज से ही छोड़ दें समस्त नशों का सेवन तथा सुख-समृद्धि के लिए प्रभु के नाम का सिमरन एकमात्र अनुसरण कर, अपना जीवन सुखमय बनाते हुए परिवार, समाज एवं देश का भला करें!

Final

कविता

बाणी है पतवार

*-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी**

बाणी है पतवार ऐ लोगो, बाणी है पतवार।
डूब रही जीवन की नय्या पल में लगा दे पार।
बाणी अमृत की मटकी है।
हर इक सिर पर भी लटकी है।
दुनिया सहरा में भटकी है।
कैसे हो उद्धार
बाणी है पतवार।. . .
डूब रही जीवन की नय्या पल में लगा दे पार।
दुख में मानव बेचारा है।
बाणी सुख का हरकारा है।
बाणी रस की जलधारा है
रूहानी उपचार,
बाणी है पतवार।. . .
डूब रही जीवन की नय्या पल में लगा दे पार।
जो बाणी की शरन में आये।
उसका जन्म सफल हो जाए।
सब के बिगड़े काम बनाये।
करती परोपकार,
बाणी है पतवार।. . .
डूब रही जीवन की नय्या, पल में लगा दे पार।

**जेठी नगर, मलेरकोटला रोड, खन्ना-१४१४०१, पंजाब फोन : ९४१७०९१६६८*

गुरबाणी चिंतनधारा : ११२

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोक मः १ ॥
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु
गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥
(पन्ना ४७१)

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी जीव को पाखंड त्यागकर ईश्वर का नाम जपने की प्रेरणा देते हुए समझाते हैं कि बाहरी (श्रद्धा विहीन) कर्मों से इस संसार रूपी भवसागर से पार नहीं उतरा जा सकता। वैसे भी गुरु पातशाह ने गुरबाणी में प्रत्येक धर्म में आए पाखंडों से बचने के लिए प्रेरित किया है। यहां पाखंड की ओर संकेत करते हुए समाज में दोहरे व्यक्तित्व, कथनी और करनी में असमानता को उजागर करते हुए पाखंड छोड़ कर प्रभु स्मरण से ही भवसागर से पार उतारा संभव है इस भाव को दृढ़ करवाया है।

श्री गुरु नानक साहिब जी पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! गऊ एवं ब्राह्मण को तो (दरिया किनारे बैठकर) टैक्स (कर) लगाया जाता है अर्थात् दरिया पार उतारने हेतु गऊ एवं ब्राह्मण से टैक्स वसूल किया जाता है। यहां विचारणीय तथ्य गुरु साहिब उजागर करते हैं कि फिर भला गोबर से (घर-आंगन) को लीप कर पवित्र करके भवसागर से पार कैसे उतरा जा सकता है अर्थात् नहीं उतरा जा सकता। (बाहरी वेश की तौर पर) तूं धोती पहनता है माथे पर तिलक भी लगाता है तथा माला भी फेरता है लेकिन खादय पदार्थ मलेच्छों का खाते हो और जिन्हें (ईर्ष्यावश) मलेच्छ कहते हो लेकिन चोरी छिपे अंदर बैठ कर पूजा करते हो और बाहर मुसलमानों को दिखाने हेतु कुरान आदि पढ़ते हो आखिर में गुरु साहिब समझाते हैं तूं पाखंड छोड़ दे। केवल नाम-सिमरन से ही भवसागर से पार उतारा संभव है अत: नाम जप जिससे सहजता से संसार-समुद्र से पार उतरा जा सके।

वास्तव में श्री गुरु नानक साहिब जी के समय भारत में मुख्यतया दो धर्म-हिंदू तथा इस्लाम मौजूद थे इस सलोक में गुरु साहिब ने दोनों धर्मों के कथित मुखियों के दिखावे के जीवन एवं कर्मकांडों को दर्शाया है और उन्हें इन दिखावटी प्रपंचों से उबरने की हिदायत भी दी है। साथ ही समस्त धार्मिक नियमों को ताक पर रखकर बाहरी तौर पर धार्मिक चिन्ह धारण करने वाले पाखडियों को गुरु साहिब ने समझाया कि ऐसे विश्वास घाती जो स्वार्थ एवं लोभ वश अपने ही भाइयों के गले काटते हैं अर्थात् मुसलमान बादशाहों से मिलकर अपने ही हिंदू भाइयों की शिकायतें करके उन्हें पकड़वा कर रिश्वतें लेकर अपनी तिजोरियां भरते हैं और फिर ऐसे विश्वासघातियों के घर का अन्न खाकर ब्राह्मण भी पाप के भागी बन जाते हैं।

वस्तुत: इस सलोक में विविध पहलुओं द्वारा

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

प्रत्येक इन्सान का मार्गदर्शन किया गया है कि किस प्रकार हमारी करनी एवं कथनी एक रूप होनी चाहिए स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर परोपकारी जीवन बनाना है। ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर जानते हुए पाखंडों से नहीं अपितु निस्वार्थ भाव से ईश्वर की बंदगी ही भवसागर से पार उतारने में मददगार सिद्ध होगी इस गूढ़ तथ्य को स्मृति में हर पल कायम रखना।

गुरबाणी आश्यानुसार तो उन्हीं का जीवन सफल है जब जीव को ब्रह्म ही दिखाई दे, ब्रह्म ही सुनाई दे और केवल एक ही पार ब्रह्म परमेश्वर की उपमा हो। वस्तुत: आत्मा का यह विस्तार करने वाला प्रभु आप ही है। वह स्वयं ही कर्त्ता है, भोगने वाला है एवं सृजनकर्त्ता है और इस रहस्य को वही जान सकते हैं जिन्होंने परमेश्वर के नाम का रस पान किया है। यथा :

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥
आतम पसारा करणहारा
प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥
आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥
बिनवंति नानक सेई जाणहि
जिन्ही हरि रसु पीआ ॥ *(पन्ना ८४६)*

अत: परमेश्वर का सिमरन ही सर्वोपरि है, जिस भाग्यशाली को यह दात नसीब हो जाए।

म: १ ॥
माणस खाणे करहि निवाज ॥
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
कूडु बोलि करहि आहारु ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥
नानक कूडु रहिआ भरपूरि ॥
मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥
हथि छुरी जगत कासाई ॥
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥
चउके उपरि किसै न जाणा ॥
दे कै चउका कढी कार ॥
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥
इहु अंनु असाडा फिटै ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥
मनि जूठै चुली भरेनि ॥
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ *(पन्ना ४७१)*

इस सलोक में गुरु पातशाह जी ने कर्मकांडों एवं पाखंडी जीवन वालों का पर्दाफाश किया है तथा उन्हें करनी एवं कथनी से एक रूप होकर सच्चा एवं पवित्र जीवन जीने का मार्ग समझाते हैं और सभी धर्मों में प्रवेश कर चुकी बुराइयों का विरोध करते हुए इस हकीकत से रू-ब-रू करवाते हैं कि बाहरी पवित्रता अथवा किसी तरह का वेश धारण करने से नहीं अपितु हृदय की पवित्रता से परमेश्वर का सिमरन करने से ही ईश्वर को पाया जा सकता है अर्थात् इस मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य को सफल किया जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि मानव भक्षण करने वाले अर्थात् मनुष्यों को खा जाने वाले अत्याचारी काजी एवं मुसलमान हाकिम नमाज़े पढ़ते हैं। छुरियां चलाकर मास तैयार करने वाले इनके मुलाजिम खत्री हैं, जिन्होंने अपने गले में जनेऊ धारण कर रखे हैं। छुरी चलाने अर्थात् गरीबों पर जुल्म करने वाले पत्थर हृदय वाले ये लोग

बाहरी रूप से ही धार्मिक है। इन अत्याचार खत्रियों के घर में जाकर ब्रह्मण शंख बजाते हैं और भोजन करते हैं तथा उन ब्राह्मणों को उस भोजन में से वैसा ही स्वाद आता है अर्थात् पाप वृत्ति से कमाए गए धन से किया गया भोजन तामसिक वृत्ति वाला हो जाता है अर्थात् ब्रह्मण भी जुल्म से कमाए हुए धन से तैयार हुआ भोजन ग्रहण करके पाप के भागीदार बन जाते हैं।

इन लोगों की पुंजी झूठी है और झूठा ही व्यापार है। झूठ बोल-बोल कर ही ये आजीविका (रोज़ी-रोटी) कमाते हैं अब शर्म-हया तथा धर्म-कर्म इनकी जिंदगी से कोसों दूर हो गया है। अर्थात् इनके जीवन में ना तो लाज-शर्म रही और न ही कोई धर्म-कर्म। गुरु पातशााह कथन करते हैं कि सर्वत्र झूठ का ही बोलबाला है अत: हर तरफ झूठ ही प्रधान हो गया है। लोगों ने मस्तक पर टीका लगा रखा है तथा कमर पर गेरूए रंग की धोती बांधते हैं। लेकिन हाथ में इनके छुरी होती है जिससे संसार भर में हिंसा करते हैं अर्थात् ऐसा प्रतीत होता है मानों इनके हाथ में छुरी है जिससे ये जीवों पर जुल्म करते हैं। (यही नहीं) तुर्क हाकिमों को प्रसन्न करने हेतु ये लोग नीले रंग के वस्त्र धारण कर लेते हैं जिसके फल स्वरूप इन्हें उनके पास जाने की प्रवानगी मिल जाती है। जिन्हें ये मलेच्छ कहते हैं उन्हीं से धन लेकर पूजा पाठ करते हैं अर्थात् उन्हीं के धन से इनकी रोज़ी चलती है और फिर भी पुराण की पूजा करते हैं। फिर ये अखाद्य (न खाने योग्य) पदार्थ खाते हैं लेकिन स्वयं को धर्म ग्रंथों के अनुसार चलने वाले मान कर कहते हैं कि हमारे चौंके में कोई प्रवेश न करे। चौंका बना कर उस पर लकीर (रेखा) खींच देते हैं और कहते हैं यह स्थान पवित्र है इस में प्रवेश निषेध है अर्थात् दूसरों को उसमें आने की अनुमति नहीं देते और वास्तव में उस स्थान पर वो लोग बैठते है जो स्वयं झूठे हैं अर्थात् अपवित्र हैं। लेकिन दूसरों को हिदायत देते हैं इसे छूना मत ताकि हमारा चौंका भ्रष्ट (अपवित्र) न हो जाए। ताकि हमारा अन्न खराब न हो जाए। लेकिन स्वयं तो ये लोग अपवित्र शरीर से न करने योग्य कार्य करते हैं। अत: ये तो पहले से ही विकारी है। इनका खोटा एवं विकारी मन है लेकिन बाहर से ये जल से चुल्ले करके पवित्र होने का ढोंग कर रहे हैं अर्थात् बाहर से पवित्र जल से कुल्ला कर लेने से मन पवित्र नहीं हो सकता। श्री गुरु नानक देव जी अंतिम पंक्ति में इस हकीकत से रू-ब-रू करवाते हैं कि हे भाई! पाखंड छोड़ कर प्रभु नाम का सिमरन करो तभी हृदय पवित्र हो सकेगा और ईश्वर की प्राप्ति हो सकेगी।

गुरु पातशाह ने समूचे सलोक में बाहरी आडंबरों कर्म-कांडों एवं दिखावों से बचने की प्रेरणा देते हुए समझाया है कि हृदय की शांति एवं ईश्वर की प्राप्ति सच्चे हृदय से ईश्वर की बंदगी करने में ही निहित है। बाहरी कोई उपक्रम लोगों को भ्रमित करने हेतु हो सकता है लेकिन वास्तव में जीव स्वयं से ही धोखा कर रहा होता है, स्वयं को ही छल (ठग) रहा होता है क्योंकि ईश्वर से कुछ छिपा नहीं है वह तो घट-घट की जानने वाला अंतर्यामी है। जैसा कि चौपई साहिब बाणी में गुरु कलगीधर पातशाह समझाते हैं :

घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥ . . .
एक एक की पीर पछानै ॥
घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥

और रही बात बाहरी पवित्रता की, गुरबाणी

Final

आशयानुसार उससे अंत:करण की शुद्धता मुमकिन नहीं और न ही बाहर से खींची रेखाओं से अंदर रसोई पवित्र होने वाली है गुरबाणी तो राम-नाम की रेखा को ही पवित्र मानती है जैसा कि पंचम पातशाह पावन फरमान करते है :

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥
चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥१॥
सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥
राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥रहउ॥
राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥
कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥
(पन्ना ८१९)

और रही बात बाहर से चुल्लू करके पवित्र होने की गुरबाणी आशयानुसार प्रभु से मुख फेर लेने के कारण मुख में अपवित्रता बसी रहती है चुल्लू के वास्तविक अर्थ समझाते हुए गुरु नानक पातशाह जी ने अन्यत्र भी बहुत सुंदर समझाया है कि बहुत से चुल्लू सच्चे (पवित्र) भी है अगर कोई भरने की विधि जानता हो यथा:

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥
सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥
ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥
पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥
(पन्ना १२४०)

वास्तव में पानी हृदय को शुद्ध नहीं कर सकता लेकिन पीने से प्यास जरूर बुझ जाती है। इसलिए गुरु पातशाह ने समझाया है कि पंडित का चुल्लू ज्ञान का चिंतन, योगी हेतु वासनाओं से मुक्त रहना। ब्रह्मण का चुल्लू संतोष, गृहस्थी का पुण्य कर्म एवं दान। राजा का चुल्लू न्याय करना, विद्वान का चुल्लू सत्य का निरंतर ध्यान। अत: इस प्रजार हृदय पवित्र हो सकता है केवल पानी के चुल्लू से नहीं उसके लिए गुणों को धारण करना ही पड़ेगा। इस प्रकार पवित्रता का स्वांग भरने मात्र से जीव का कुछ भी संवरने वाला नहीं है उसके लिए तो अंत:करण की शुद्धता नितांत आवश्यक है और हृदय शुद्ध होता है प्रभु की भक्ति से। यथा :

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (पन्ना ४)
पउड़ी ॥
चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥
आपे दे वडआईआ आपे ही करम कराइदा ॥
वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥
नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥

इस पउड़ी में गुरु नानक पातशाह जी ने उस अकाल पुरख परमेश्वर के अनंत गुणों में से उसकी मेहर (कृपा दृष्टि) का वखान करते हूए जीव को यह भी समझाया है कि वह परिपूर्ण परमात्मा सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है और अगर उसकी नज़र उल्टी हो जाए तो बादशाह को रंक होने में भी देर नहीं लगती। अंत: जीव को प्राप्तियों का मान न करते हुए सदैव (हरपल) प्रभु के भय एवं अदब में रहना चाहिए ताकि उस की कृपा दृष्टि बनी रहे।

गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह पारब्रह्म परमेश्वर प्रत्येक जीव को अपनी निगाह में रखता है, एवं प्रत्येक को अपनी नज़र में रखकर उसे कर्म में प्रवृत करता है अर्थात् प्रत्येक जीव प्रभु की दृष्टि में है और उसी के हुक्म अनुसार कर्म कर रहा है। परमेश्वर आप ही जीवों को नेक कर्म में लगाकर अर्थात् उनसे शुभ कर्म करवाकर उन्हें बड़ाई (शोभा) बख़्शता है। वाहिगुरु अकाल

पुरख परमेश्वर सबसे बड़ा है और उसके द्वारा निर्मित (बनाई गई) यह सृष्टि भी अनंत है लेकिन अनंत सृष्टि के बावजूद भी प्रभु (वह मालिक) सब जीवों को विविध स्थानों पर अर्थात् कार्य स्थलों पर काम धंधों में लगाए रखता है। अगर वह सर्वकला समर्थ मालिक दुनिया के बादशाह पर भी अगर उल्टी नज़र कर दे तो उस बादशाह को घास के तिनके समान तुच्छ और हल्का कर देता है यहीं बस नहीं उनकी ऐसी बदत्तर स्थिति भी बन सकती है कि वह किसी के दर पर जा कर भीख मांगे और उसे भीख भी नसीब न हो।

वस्तुत: वह परमेश्वर अनंत उसकी रचना भी अनंत। उस प्रभु की मेहर से ही अर्थात् उसके विशेष अनुकंपा से ही कोई नेक काम करते हुए शोभा, बड़प्पन का भागीदार बन जाता है लेकिन वहीं पूर्व जन्म के नेक कर्मों की बदौलत नसीब हुई बादशाही और उससे उत्पन्न हुआ अहंकार कब जीव को उस परमेश्वर के कोप का कारण बना दे कि उस बादशाह की ऐसी दूरदशा हो जाए कि उसकी कोई बात ही न पूछे बात पूछना तो दूर की बात वह किसी के दर पर जा कर भीक्षा हेतु झौली फैलाए तो उसकी झोली में कोई भीख भी न डाले। इसलिए जीव के लिए परमावश्चक है उस परमेश्वर के भय अदब में रहना क्योंकि उस सर्वशक्ति मान, सर्व कला, समर्थ प्रभु की दया दृष्टि जहां जीव को भिखारी से राजा बना देती है वहीं उसकी अनुदार दृष्टि उसे राजा से भिखारी बनाते एक पल की देरी नहीं लगती। जैसा कि पावन गुरबाणी में इसी भाव को दृढ़ करवाती भगत कबीर जी की बाणी का उदाहरण यहां उल्लेखनीय है जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि वह पारब्रहम परमेश्वर जल से सूखी धरती तथा सूखी धरती से कुंआ बना सकता है और कुएं से पहाड़ का निर्माण कर सकता है। वह चाहे तो व्यक्ति को धरती से उठाकर अकाश पर चढ़ा दे और चाहे तो आसमान से जमीं पर गिरा दे। वह भिखारी को राजा भी बना देता है और राजा को भिखारी भी। वह दुष्ट एवं मूर्ख व्यक्ति को विद्वान बना सकता है तथा बड़े-बड़े विद्वानों को मूर्ख बना सकता है। इसलिए कबीर जी उस परमेश्वर को साधू पुरुषों का प्रियतम मानते हैं और उसके सुंदर विलक्षण रूप पर बलिहार जाते हैं गुरबाणी प्रमाण :

जल ते थल करि थल ते कूआ
कूप ते मेरु करावै ॥
धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥२॥
भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥
खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥३॥
नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥
कहु कबीर साधू को प्रीतमु
तिसु मूरति बलिहारी ॥४॥ (पन्ना १२५२)

अत: जरूरत है तो बस उस पारब्रहम परमेश्वर से प्राप्त हुई प्रत्येक दात का शुक्राणा करते हुए हर पल उस परमेश्वर के भय-अदब में रहकर उसका सिमरन करने की तथा उसकी अनंत रहमतों का पात्र बनने की।

Final

ख़बरनामा

गुरुद्वारा श्री गिआन गोदड़ी साहिब हरिद्वार के पुन: स्थापना के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वफ़द द्वारा उत्तराखंड के मुख्य मंत्री से मुलाकात

श्री अमृतसर : ७ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर द्वारा गुरुद्वारा श्री गिआन गोदड़ी साहिब हरिद्वार (उत्तराखंड) मामले संबंधी गठित की गई कमेटी के सदस्यों ने उत्तराखंड के मुख्य मंत्री श्री त्रिवेंदरा सिंघ रावत के साथ मुलाकात करके गुरुद्वारा साहिब के लिए जगह देने की मांग की ताकि गुरुद्वारा साहिब का शीघ्र निर्माण हो सके। इस वफ़द में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता, मुख्य सचिव स. हरचरन सिंघ तथा अतिरिक्त सचिव स. हरभजन सिंघ मनावां शामिल थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से गए इस वफ़द ने उत्तराखंड के मुख्य मंत्री श्री त्रिवेंदरा सिंघ रावत को सिक्ख संगत की भावनाओं के अनुसार गुरुद्वारा श्री गिआन गोदड़ी साहिब के निर्माण हेतु संजीदा यत्न करने के लिए कहा। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुख्य सचिव स. हरचरन सिंघ ने बताया कि गत समय में विकास के नाम पर गिराए गए गुरुद्वारा साहिब की तुरंत स्थापना कर के सिक्खों की मांग को पूरा करने के लिए उत्तराखंड के मुख्य मंत्री के साथ बेहद सुखद माहौल में बातचीत हुई है। उन्होंने कहा कि इस मामले को मुख्य मंत्री ने गंभीरता से लेते हुए गुरुद्वारा साहिब के वापिस निर्माण के लिए जगह देने का भरोसा दिया है।

वर्णननीय है कि गुरुद्वारा श्री गिआन गोदड़ी साहिब हरिद्वार हरि की पौड़ी में स्थित थी जिस को गुत समय में विकास के नाम पर सरकार द्वारा गिरा दिया गया था। इस कारण सिक्ख संगत में रोष चला आ रहा है और समय-समय पर गुरुद्वारा साहिब की पुन: स्थापना के लिए शिरोमणि कमेटी द्वारा जगह देने की मांग की जा रही है। चाहे २००१ ई में सरकार ने जगजीतपुरा में जगह देने की भी बात कही थी, परंतु संगतों की तरफ से जगह योग्य न होने के कारण न-मंजूर कर दी गई। सरकार की तरफ से दोबारा फिर राणीपुर मोड़ पर गुरुद्वारा साहिब के निर्माण के लिए जगह दिखाई गई जिस के लिए गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधकों ने सहमति दी, परंतु यह जगह सरकार के सिंचाई विभाग के पास होने के कारण अभी तक नहीं मिल सकी।

सिक्खों की मांग के मद्देनज़र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने चार सदस्यीय कमेटी गठित करके मामले का हल करने के लिए यत्न आरंभ किए हैं और इस तहत ही गठित की कमेटी के सदस्यों ने उत्तराखंड के मुख्य मंत्री के साथ मुलाकात करके तुरंत गुरुद्वारा साहिब स्थापित करने के लिए जगह की मांग की है।

कनाडा के पहले सिक्ख रक्षा मंत्री स. हरजीत सिंघ सज्जण सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक, प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने किया विशेष सम्मान

श्री अमृतसर : २० अप्रैल : कनाडा के पहले सिक्ख रक्षा मंत्री स. हरजीत सिंघ सज्जण ने आज रूहानियत के केंद्र सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा-भावना

का प्रकटावा किया। यहां पहुंचने पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर और पदाधिकारियों की तरफ से उनका ज़ोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में श्रद्धा के साथ कड़ाह प्रशादि की देग करवाई और दरबार में पहुंचने पर उनको मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने सतिगुरु जी की बख़्शिश सिरोपाउ भेंट किया। बाद में उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब में भी माथा टेका। इस से पहले जब वह घंटा घर दरवाज़े से परिक्रमा में पहुंचे तो श्री आसा की वार के उपरांत अरदास हो रही थी। इस पर वह मर्यादा के अनुसार एकाग्र चित्त होकर अरदास में शामिल हुए और फिर परिक्रमा में बैठकर पावन हुक्मनामा श्रवण किया। वह जल्दबाजी से दूर पूर्ण सहज में नज़र आ रहे थे। परिक्रमा करते हुए उन्होंने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब व और स्थानों की ऐतिहासिक महानता के बारे जानकारी प्राप्त करने में विशेष रुचि दिखाई। इस दौरान स. हरजीत सिंघ सज्जण ने विज़िटर बुक्क में 'मेरी सफलता गुरू साहिब जी की बख़्शिश है' दर्ज करके सतिगुरु जी के प्रति असीन श्रद्धा और सम्मान का प्रकटावा किया।

इस मौके शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से श्री दरबार साहिब के पलाज़ा में एक समागम में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, जनरल सचिव स. अमरजीत सिंघ चावला तथा और पदाधिकारियों की तरफ से स. हरजीत सिंघ सज्जण को श्री साहिब, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब का सुनहरी मॉडल, विशेष तसतरी और धार्मिक पुस्तकों के सैट के साथ सम्मानित किया गया। सम्मान के लिए विशेष तौर पर बनवाई गई तसतरी के ऊपर "शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर स. हरजीत सिंघ सज्जण रक्षा मंत्री, कनाडा को सिक्ख कौम की विलक्षण अस्तित्व तथा पहचान को दृढ़ करवाने ओर उनके द्वारा सिक्ख कौम प्रति की गई महान सेवाओं का सम्मान करते हुए खुशी और फख्र महसूस करती है" लिखा हुआ था।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने संबोधन करते हुए कहा कि कनाडा के रक्षा मंत्री स. हरजीत सिंघ सज्जण का परंपरा के मुताबिक सम्मान किया गया है। उन्होंने कहा कि स. हरजीत सिंघ का विकसित देश कनाडा के रक्षा मंत्री बनना समूची कौम के लिए गौरव की बात है। आज यह अपने पुश्तैनी सूबे में आने पर मुकदस अस्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने आए हैं, हम इनका तहे दिल से अभिनंदन करते हैं। प्रो. बडूंगर ने स. सज्जण को सिक्ख कौम की शान और पंजाबियों का मान कह कर उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि कनाडा के साथ भारत का बड़ा विश्वास वाला रिश्ता है। कनाडा में सिक्ख संस्कृति के उत्थान का खास तौर पर ज़िक्र करते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी अध्यक्ष ने कहा कि सिक्ख इतिहास और परंपरा से संबंधित ऐतिहासिक पर्वों को वहां रहते सिक्खों द्वारा जोश तथा जज़्बे के साथ मनाया जाता है, जिस में कनाडा के मूल निवासियों की तरफ से भी ज़ोरदार शमूलियत की जाती है। यह सिक्ख कौम के लिए गौरवशाली बात है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कनाडा में अपनी मेहनत और समाज की भलाई के कार्य करके अपनी संस्कृति की गौरवता का प्रकटावा कर रहे हैं। इसी लिए ही वहां के लोग तथा सरकारें सिक्खों को मंत्री और कैबनिट मंत्री बना कर बड़ा सम्मान दे रहीं हैं।

Final